प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

माही की गूंज

बेबाकी के साथ..सच

www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

आप अपनी योग्यता को जानकर और उस पर विश्वास करके एक सुंदर संसार का निर्माण कर सकते है।

दलाई लामा

वर्ष-03, अंक - 12 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 24 दिसम्बर 2020 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

कृषि कानून को लेकर राहुल गांधी विजय चौक से राष्ट्रपति भवन तक करेंगे मार्च

नई दिल्ली, एजेंसी। कृषि कानूनों को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी आज सुबह 10.45 बजे विजय चौक से लेकर राष्ट्रपति भवन तक मार्च करेंगे, इस दौरान राहुल के नेतृत्व में अन्य कांग्रेसी सांसद भी इसमें भाग लेंगे। इसके बाद राहुल और अन्य कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से मुलाकात करेंगे और उनके हस्तक्षेप के लिए दो करोड़ हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन प्रस्तुत करेंगे।

नरोत्तम मिश्रा ने कांग्रेस नेताओं पर साधा निशाना

वहीं, कांग्रेसी नेताओं के प्रदर्शन को लेकर मध्यप्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि, कांग्रेस नेता कमलनाथ, जो 15 महीनों में कभी किसान के खेतों में नहीं गए, वे ट्रैक्टर की सवारी करेंगे। राहुल गांधी, जिन्होंने सोफा-कम-ट्रैक्टर चलाया था, उन्हें यह भी नहीं पता कि, आलू जमीन के ऊपर उगता है या नीचे।

69 पूर्व नौकरशाहों का पीएम मोदी को लिखा ओपन खत

नई दिल्ली। सेंट्रल विस्टा परियोजना पर पूर्व नौकरशाहों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ओपन लेटर लिख सवाल खड़े किए हैं। पूर्व नौकरशाहों के एक समूह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक खुला पत्र लिखकर सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना पर चिंता व्यक्त करते हुए आरोप लगाया है कि, शुरुआत से ही गैर जिम्मेदाराना रवैया दिखाया जा रहा है। कांस्टिट्यूशनल कंडक्ट ग्रुप के बैनर तले 69 सेवानिवृत्त नौकरशाहों ने दावा किया है कि, देश का लोक स्वास्थ्य ढांचा निवेश का इंतजार कर रहा है और सवाल किया कि, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सामाजिक प्राथमिकताओं के स्थान पर बेकार और अनावश्यक परियोजना को प्रधानता क्यों दी जा रही है।

जीआर इंफ्रा कंपनी के टैंकर ने बाइक को मारी टक्कर, गर्भ में पल रहे बच्चे के साथ महिला की मौत

जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कम्पनी सडक निमार्ण के साथ लोगो को मौत के घाट उतार कर बन रही मौत का सौदागर

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भटेवरा

दिल्ली-मुंबई 8 वें मार्ग का निर्माण करने वाली जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी रोड मार्ग में कार्य के दौरान मोरम, गिट्टी, मिट्टी आदि उपयोग बिना रायल्टी से कर शासन को बड़े स्तर पर चूना लगाने वाली उक्त कंपनी लोगो को मौत के घाट उतारने में भी कोई कसर नहीं छोड़ रही है। झाबुआ जिले के काकनवानी क्षेत्र में ब्लासिंटग के दौरान, पुल निर्माण के दौरान व अन्य कार्य के दौरान 3 से 4 लोगों को अपनी अनियमितताओं के साथ मौत के घाट उतार दिया और मौतो का सौदा कर मामले को आसानी से रफा-दफा करने वाली जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी के मुलाजिम फिर भी अपनी लापरवाहीयो से बाज नहीं आ रहे हैं और लोगों की जान कहीं ब्लासिंटग के दौरान खतरे में डाल रहे हैं, तो अब देखने में आ रहा है कि, उक्त सड़क निर्माण कंपनी के मुलाजिम राहगीरों को भी टक्कर मारकर मौत के घाट उतारने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

मामला मंगलवार को देखने मिला जिसमें थांदला थाने के खवासा चौकी क्षेत्र में बामनिया-केसरपुरा मार्ग पर नौगांवा कालिया निवासी लूणिया गरवाल अपनी गर्भवती पत्नी को लेकर बाईक से बामनिया की ओर जा रहा था। लेकिन लूणिया गरवाल को क्या पता था कि, मौत के सौदागर जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी का ट्रक टक्कर मारकर उसकी दुनिया ही उजाड़ देगा।

खुशी-खुशी बाईक पर अपनी पारिवारिक चर्चा करते हुए लूणिया अपनी पत्नी मुन्नी के साथ बामनिया की ओर जा रहा था कि, अचानक सामने से जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी का पानी का टैंकर लापरवाही के साथ आ रहा था कि, संगत फंटे पर टर्निंग में बाईक को टक्कर मारकर टैंकर लेकर भाग गया और आगे टैंकर खड़ा कर हत्यारा चालक नरसिंहराम कंपनी के केम्प में चला गया। वही टैंकर की जोरदार टक्कर से बाइक के साथ लूणिया व मुन्नी दोनों पति-पत्नी दुर्घटनाग्रस्त हो गए जिसमें मुन्नी (25) की मौत अपने करीब 5 माह के गर्भ में पल रहे बच्चे के साथ दोनों की मौत घटनास्थल पर ही हो गई, वही लूणिया के हाथ-पैर व शरीर के अन्य अंगों में चोट आकर घायल हो गया।

18 घंटे के बाद हुआ मौत का सौदा, संवेदनशीलता अब हो रही तार-तारः एसडीओपी गवली

मंगलवार शाम करीब उक्त असहनीय दुर्घटना होने के बाद घटना की सूचना पुलिस को मिलने के बाद थांदला एसडीओपी मनोहरलाल गवली के साथ थाना टीआई व पुलिस बल मौके पर पहुंचा जहां पुलिस ने शव को पीएम करवाने हेतु खवासा ले जाने व घायल लूणिया को उपचार हेतु हॉस्पिटल भेज चालक के विरूद्ध मामला दर्ज करवाने को कहा। परंतु परिजन के साथ ग्रामीण न ही घायल को उपचार हेतु हॉस्पिटल भेजने को तैयार हुए और न ही शव को पीएम करवाने हेतु खवासा ले जाने के लिए, उनकी एक ही मांग रही कि जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी जब तक भांजगड़ी कर मौत व दुर्घटना का हर्जाना नहीं देगा तब तक महिला का शव सड़क पर ही रहेगा और लूणिया का उपचार भी नहीं करवाया जाएगा। जिसमें हर्जाने उर्फभांजगड़ी के रूप में 35 लाख रुपए की मांग की गई और जीआर इंफ्रा कंपनी के क्रमांक नंबर 23 के नौगांवा स्थित केम्प पर आधी रात तक कंपनी के केम्प के इंचार्ज लोगों से बातें होती रही पर जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी के मुलाजिम पूर्व में मौतों का सौदा कर चुके सौदागर अच्छी तरह से यह जानते हैं कि, यह सौदा आखिर में कितने तक निपटेगा और यह भी जानते थे कि हमारी कंपनी का जोड़-तोड़ पुलिस से लेकर पूरे प्रशासन पर इतना तो है कि वह कंपनी को पूरा सहयोग भी करेगी। नतीजन आधी रात तक सौदा नहीं निपटने पर पुलिस ने अपना काम किया और शव को अपने हाथों से वाहन में रख खवासा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर ले आई तथा लूणिया को उपचार हेतु पेटलावद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर भेजा गया।

अलसुबह से फिर हुई मौत के सौदे की शुरूआत

वही अल सुबह से एसडीओपी गवली के साथ थांदला थाना, झाबुआ कोतवाली व काकनवानी थाने की पुलिस ने खवासा चौकी पर मोर्चा संभाला और 20 लाख से बात चालू हुई, लेकिन जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी के मैनेजमेंट कर्ता अपने ऊपर के अधिकारियों का हवाला देकर कहते रहे, साहब इतने में नहीं मान रहे हैं 6-7 लाख रुपए तक दे सकते हैं। इसी तनाकशी के बीच घटना के 18 घंटे के बाद करीब 12 बजे के बाद 5 लाख रुपए में महिला एवं उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की मौत का सौदा पुलिस की उपस्थिति में हुआ। जिसके बाद दुर्घटना का मामला जीआर इंफ्रा प्रोजेक्ट कंपनी में कार्य कर रहे टैंकर चालक नरसिंहराम पिता पोकर राम बोदारा निवासी नागौर राजस्थान के विरुद्ध मामला दर्ज कर हत्यारा पानी का टैंकर क्रमांक यूपी 70 एफटी 7342 को जप्ती में लेकर शव का पीएम करवाया गया, जिसके बाद देर शाम को शव का अंतिम संस्कार किया गया।

उक्त मामले में माही की गूंज से चर्चा के दौरान थांदला एसडीओपी मनोहर गवली ने बताया कि, सारी संवेदनशीलता खत्म हो चुकी है जिसके कारण ही शव की भी मट्टी पलीत हो रही है और दुर्घटना के बाद घायल का उपचार तक परिजन भांजगड़ी होने तक नहीं करवाने की बात करते हैं, जिसे देखकर आखिर मानवीय संवेदनशीलता खत्म सी हो गई है यह देखा जा रहा है।

14 हजार रूपए प्रति किविन्टल बीका देसी लहसुन

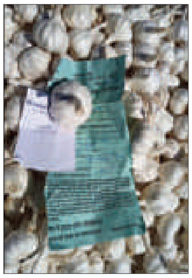

माही की गूंज, रतलाम/सुखेडा।

राजस्थान रोड पर स्थित नवीन उपमंडी प्रांगण पर व्यापारियों द्धारा किसानों की फसलो की अच्छी बोली लगाने पर किसान वर्ग के लोग खुश नजर आए, यही वज़ह है कि, मंदी के समय भी सुखेडा सहित आस-पास के किसानों के साथ राजस्थान के किसान भी अपनी उपज लेकर इस केन्द्र पर पहुंचे रहे हैं। ज्ञात रहे सुखेडा उपमंडी प्रांगण पर गेहूं, सोयाबीन, मक्का, डालर चना की उपज के अलावा प्याज व देसी लहसुन की भी बम्पर आवाक हो रहीं हैं। मंगलवार को भी नेवेली के किसान निरज की लहसुन की बोली श्री श्याम ट्रेनिंग के प्रोपराइटर ने 14 हजार रुपए प्रति किविन्टल के हिसाब से खरीदी की। उपमंडी के प्रभारी गजराजसिह ने बताया कि, सुखडा उपमंडी समय-समय पर खोलीं जा रही है ये ही नहीं सुखेडा उपमंडी प्रांगण पर किसानों के साथ व्यापारियों की चहल-पहल से उपमंडी में भी आवाक बड रहीं हैं।

मत्स्य विभाग के सहायक संचालक को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा

उज्जैन लोकायुक्त की टीम ने की कार्रवाई

माही की गूंज, रतलाम।

उज्जैन लोकायुक्त की टीम ने रतलाम के मत्स्य विभाग के सहायक संचालक बहादुर सिंह डामर को रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ लिया साथ ही टीम ने अधिकारी के पास से रिश्वत के 10 हजार रुपए भी जब्त किए हैं। आरोपी अधिकारी एक किसान से अनुदान स्वीकृति के लिए 10 हजार रूपए की मांग की थी। जानकारी के अनुसार पिपलौदी निवासी किसान शोभाराम धाकड़ ने लोकायुक्त को शिकायत की कि, संचालक डेढ़ लाख के अनुदान की स्वीकृति हेतु 50 हजार की रिश्वत मांगी थी, जिसके के लिए शोभाराम रिश्वतखोर संचालक को 25 हजार रूपए दे चूका था, लेकिन संचालक ने बजट की समस्या बताकर अनुदान की स्वीकृति नहीं दी। जिसके बाद शोभाराम ने लोकायुक्त को मामले की शिकायत की। उक्त शिकायत पर टीम ने शोभाराम 500-500 के 10 हजार के नोटों की गड्डी दी और सहायक संचालक को रूपए देने के बाद कार्यालय के बाहर खड़ी टीम को इशारा करने की रणनीति बनाई, शोभाराम टीम के कहे अनुसार मंगलवार दोपहर 1 बजे रतलाम के मत्स्य विभाग के कार्यालय पहुंचा और रिश्वतखोर संचालक को लोकायुक्त द्वारा दिए 10 हजार रूपए दे दिए और रिश्वतखोर संचालक ने उक्त राशि को अपनी डायरी में रख लिया। इस बीच शोभाराम ने बाहर आकर टीम को इशारा किया, जिसके बाद लोकायुक्त की टीम रिश्वतखोर संचालक के ऑफिस में पहुंची

और दिए हुए नोटों की जांचकर आरोपी के हाथ कैमिकल से धुलाए, जिसके बाद पानी का रंग बदल गया, ऑफिस में मौजूद बहादुर सिंह डामर लोकायुक्त की टीम को देखकर घबरा गया और रोने लगा। रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ाया आरोपी बहादुर सिंह किसान को कार्रवाई का दोष देते हुए आत्महत्या करने की धमकी दी। लोकायुक्त की टीम द्वारा रिश्वत प्रकरण से संबंधित समस्त दस्तावेज और अन्य जानकारी जुटाकर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

मामाजी की आस्था भारी पडती है या प्रशासन के लिए गाइडलाईन की चुनौती

स्वतंत्रता सेनानी मामा बालेश्वर दयाल की 22 वी पुण्यतिथि पर कोई घोषित आधिकारिक कार्यक्रम नही

समाधी पर जाने के लिए प्रशासन ने बनाया वैक्लपीक मार्ग

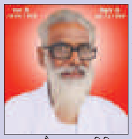

माही की गूंज बामनिया, गौरव भंडारी/राकेश गेहलोद

स्वतंत्रता सेनानी मामा बालेश्वर दयाल की 22वी पुण्यतिथि 26 दिसम्बर शनिवार को मनाई जाएगी, बामनिया मामा जी के आश्रम व उनके समाधि स्थल पर होने वाले प्रतिवर्ष अनुसार आयोजन को इस बार कोरोना कोविड-19 संक्रमण के चलते अधिकृत रूप से बिना किसी बड़े आयोजन के मनाये जाने का निर्णय लिया गया है। आश्रम से जुड़े मामा जी के भक्तों और आयोजको ने भी अपनी और से मामाजी के अनुयायो से अपील की है कि, वो इस बार कोरोना संकट को देखते हुए घर से ही श्रद्धांजलि दे और समाधि स्थल पर नही आए, प्रशासन ने भी अपनी और से मामाजी के आश्रम और समाधि स्थल का दौरा कर पुण्यतिथि पर समाधि स्थल पर अधिक भीड़ नही उमड़े इसके लिए व्यवस्था का जायजा भी लिया है।

कोरोना का डर भी नही रोक पाएगा, नेता नही भगवान की पदवी पर है मामाजी

पूरे देश मे हजारों स्वतंत्रता सेनानी रहे है और उनकी पुण्यतिथि पर भी लोग उनको याद करते है लेकिन मामा बालेश्वर दयाल उनके अनुयायो के लिए केवल स्वतंत्रता सेनानी नही बल्कि भगवान की तरह पूजे जाते है, इसलिए उनकी हर पुण्यतिथि पर उनके भक्तों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही जा रही है, जहां एक समय मामाजी के आश्रम पर आने वालों को खाना पीना तक नही नसीब होता था, आज वही पर दो दिन का मेला लगना शुरू हो गया है, भारी ठंड के बीच महिला, पुरुष, बुजुर्ग ओर बच्चे सभी लोग बड़ी संख्या में पैदल और वाहनों के माध्यम से यहां आकर मामाजी की समाधि पर माथा टेकते है और नारीयल, अगरबत्ती और पूजा सामग्रियों से पूजा-पाठ कर आशीर्वाद लेते है। मामाजी के भक्तों के लिए मामाजी उनके भगवान की तरह पूजनीय है, ऐसे में कोरोना काल की वर्तमान स्थिति को देखते हुए मामाजी के भक्तों को बिना सख्ती के रोक पाना सम्भव नही है।

राजस्थान के कुशलगढ़, डूंगरपुर और बांसवाड़ा से अधिक पहुंचते है लोग

वैसे तो मामा बालेश्वर दयाल बामनिया में रहते थे, लेकिन उनका कर्म क्षेत्र जिले से लगे राजस्थान के सीमावर्ती बांसवाड़ा, डूंगरपुर, दाहोद, पंचमहल आदि जिलो में अति पिछड़ा आदिवासी समाज की सामाजिक बुराइयों को दूर करने का कार्य करते और उनकी शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य किया, मांस मंदिरा जैसी बुराइयों को दूर किया जिस कारण आज भी मामाजी पीढ़ी दर पीढ़ी आदिवासी समाज मे भगवान के रूप में पूजे जा रहे है। कुशलगढ़, बांसवाड़ा और डूंगरपुर क्षेत्र में कई विद्यालय आज भी मामा बालेश्वर दयाल के नाम पर है और कई जगहों पर उनकी प्रतिमा भी स्थापित की गई है।

राजनीति का केंद्र बिंदु बना समाधि स्थल

कुशलगढ़ क्षेत्र में जनता दल यूनाइटेड का वर्चस्व अच्छा-खासा मामाजी की वजह से बना हुआ था, मामाजी के निधन के बाद जेडीयू ने अपना नाम बनाए रखने के लिए बड़े राजनीतिक आयोजन शुरू में किए इसके बाद समाजवादी पार्टी ने भी मामाजी के नाम पर अपना वर्चस्व जमाने का प्रयास किया, तो जनता दल के कई धड़ो ने अपने-अपने नाम से मामाजी के नाम पर रोटियां सेकी।

आज भी उपेक्षित है मामाजी का आश्रम

मामा बालेश्वर दयाल के अनुयायी निस्वार्थ भाव से यहां आते है, लेकिन उनके नाम को भुना कर अपना उल्लू सीधा करने वाले आज तक मामाजी के आश्रम को उतना नही सवार सके जितना कि, उनके नाम पर वादे किए गए, उसके उलट मध्यप्रदेश सरकार और स्थानीय प्रशासन और नेताओं ने भी मामाजी के भील आश्रम के विकास के लिए कोई प्लान या प्रोजेक्ट नही बनाया, सही मायनों में मामाजी और उनका आश्रम उपेक्षित है। स्थानीय विधायक, सांसद और जनप्रतिनिधि वर्ष में एक बार भी केवल दिखावे के लिए बमुश्किल यहां पहुंचते है। कोरोना संकट जैसी बड़ी त्रासदी के बीच पहला अवसर है कि, शासन की गाइडलाईन को चुनौती देकर आस्था भारी पड़ती है या प्रशासन ये देखना होगा।

25 दिसम्बर को पीएम किसान योजना की अगली किश्त जारी करेंगे प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पीएम किसान सम्मान निधि के तहत वित्तीय लाभ की अगली किश्त 25 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जारी करेंगे। देश के 9 करोड़ से अधिक लाभार्थी किसान परिवारों को 18 हज़ार करोड़ रुपए दिए जाएंगे। इस कार्यक्रम के तहत वे छह अलग-अलग राज्यों के किसानों के साथ बातचीत भी करेंगे।

एक से दो हफ्तों में टीके का अतिरिक्त डाटा सौंपेगी भारत बायोटेक

नई दिल्लीए एजेंसी। कोरोना वायरस के खिलाफ स्वदेशी टीका विकसित करने वाली हैदराबाद की कंपनी भारत बायोटेक एक से दो हफ्तों के भीतर भारतीय दवा महानियंत्रक (डीसीजीआइ) को वैक्सीन का अतिरिक्त डाटा मुहैया करा देगी। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के सहयोग से भारत बायोटेक ने (कोवैक्सीन) नामक वैक्सीन विकसित की है और इसके इमरजेंसी इस्तेमाल की मंजूरी के लिए आवेदन किया है। कंपनी ने वैक्सीन के लिए पहले और दूसरे चरण का परीक्षण एक हजार वॉलंटियर पर किया था। इसके नतीजे बेहतर आने के बाद अब कंपनी देश के 25 केंद्र पर तीसरे चरण का परीक्षण कर रही है। कुल 26 हजार वॉलंटियर पर तीसरे चरण का परीक्षण किया जाना है।

जनवरी में राम मंदिर के लिए धन संग्रह का अभियान होगा शुरू

आबकारी विभाग ने की ई-गवर्नेंस में पहल, लाइसेंस प्रक्रिया हुई आसान

आधुनिक उपकरणों के उपयोग के लिए ऑनलाइन वर्चुअल वर्कशॉप

अब प्रदेश में स्व-सहायता समूह चलाएंगे साँची बाज़ार

पिछले दिनों एनएचएम के अफसरों को धार जिले में की गई जांच में चलित अस्पताल में कई तरह की खामी मिली थीं

फर्जीवाड़ा सामने आने पर दीनदयाल चलित अस्पतालों पर रोक, ठेकेदार ने बगैर मरीजों के आए ही बता दिया इलाज

एनएचएम की एमडी छवि भारद्वाज ने जारी किया आदेश

भोपाल

कई जिलों में गड़बड़ियां सामने आईं

बिना सुविधा दिए सरकार से वसूल रहे राशि

योजना का उद्देश्य

क्या है योजना

नगरीय निकाय चुनाव के टिकट को लेकर मारामारी

इंदौर में भाजपा के पूर्व विधायक ही बढ़ा रहे हैं पार्टी की मुश्किल

भोपाल

ये नेता मांग रहे टिकट

कांग्रेस में भी तकरार

कांग्रेस में नया फॉर्मूला

पूर्व विधायक दावेदार

हरियाणा में मप्र की बच्ची से दुष्कर्म-हत्या के मामले में सीएम सख्त

शिवराज ने हरियाणा के सीएम खट्टर से कहा-दोषी को सख्त सजा दी जाए

झज्जर में हुई घटना की जांच के लिए जाएगी मध्यप्रदेश पुलिस

भोपाल

ये हुई थी घटना

हरकतों से परेशान होकर चले गए मां और भाई

शिवनाथ घाट पर पंच तत्व में विलीन हुए मोतीलाल

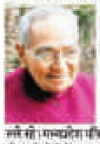

कांग्रेस विधायक 28 को विस का करेंगे घेराव

किसानों के समर्थन में ट्रैक्टर पर सवार होंगे नाथ

भोपाल

नरोत्तम का तंज-ये वही पीके हैं जिसने बिहार में लालटेन बुझाई

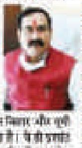

संघ राष्ट्रवादी संगठन है

अटल जी की जयंती 25 दिसम्बर पर किसानों को पीएम किसान निधि की मिलेगी राशि

प्रदेश के 78 लाख किसानों के खातों में डालेंगे रुपए

भोपाल

अगली किस्त के भुगतान के लिए हो रहा प्रबंध

विधायक और मंत्री रहेंगे मौजूद

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने घर-घर किया रेडी टू ईट का वितरण

माही की गूंज, रतलाम/सुखेडा।

माह के चोथे मंगलवार को आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक चार व मिनी केन्द्र के आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुनीता प्रजापत व अतंर गोस्वामी के साथ सहायक लीला प्रजापत ने घर-घर जाकर तीन से छः वर्ष तक के बच्चो को एक सप्ताह के लिए 720 ग्राम रेडी टू ईट दिया जा रहा है, वहीं छः माह से छः वर्ष तक के बच्चो को आयरन सिरप भी पिलाया जा रहा है।

अतंर गोस्वामी ने बताया कि, बच्चो को रेडी टू ईट वितरण के साथ परिवार के सदस्यों को कोरोना वायरस के संक्रमण के चलते प्रशासन द्वारा दिए गए नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित करतें हुए सैनिटाइजर के स्तेमाल के साथ मास्क के बारे में जानकारी दी जा रही है व भीड़ इकट्ठी न करने के बजाए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन के बारे में भी बताया जा रहा है।

लम्बे समय से टूटे पुल की वजह से बाधिंत है रायपुरिया-झाबुआ मार्ग

लोकनिर्माण विभाग की लापरवाही के कारण नही बन पाया पुल, वैकल्पिक मार्ग पर वाहन हो रहे दुर्घटना का शिकार

माही की गूंज, रायपुरिया।

सड़क निर्माण के लिए सरकारे अधिक जोर दे रही है जिससे की आवागमन की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सके, किन्तु जिम्मेदार अधिकारी सरकार की मंशाओं पर खरे नही उतर रहे है। लेकिन यहां ध्वस्त पुल के निर्माण की जिम्मेदारो को अभी तक कोई चिंता ही नहीं है। रायपुरिया से झाबुआ को जोड़ने वाला पुल फरवरी माह में क्षतिग्रस्त हुआ था तब से पुल अभी तक अपनी स्थिति पर आंसू बहा रहा है। वहीं 2020 का साल बीतने को है किंतु जिम्मेदारों के द्वारा अभी तक उक्त पुल की सुध नही ली गयी है। पुल का निर्माण नही होने से वाहन चालकों के खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, वही धूल के गुब्बारों से आसपास के रहवासियों का जीना दुश्वार हो गया है। पुल के साइड में वैकल्पिक मार्ग से वाहन का आना-जाना होता है, ऐसे में संकरा मार्ग होने से कई बार यातायात भी बाधित होता है। रायपुरिया से झाबुआ को जोड़ने वाले इस मार्ग पर बड़ी संख्या में वाहनों का आवागमन होता रहता है, ऐसे में पुल नही होने से किसी बड़ी दुर्घटना से भी इंकार नही किया जा सकता।

लोक निर्माण विभाग ने की लापरवाही

ग्रामीण कालू बैरागी, अम्रत पाटीदार, लक्ष्मीनारायण आदि ने आरोप लगाया है कि, लोक निर्माण विभाग की लापरवाही से किसी दिन कोई बड़ी दुर्घटना घटित हो सकती है तथा पुल टूटने के बाद 2 से 3 दुर्घटना भी घटित भी हो चुकी है, क्या अब जिम्मेदार किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहे है ? पुल टूटने के बाद वाहन चालकों के साथ ही ग्रामीणजन भी परेशानियों का सामना कर रहे है, उसके बावजूद इस पुल की ओर कोई ध्यान नही दिया जो समझ से परे है। मामला लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के संज्ञान में होने ओर पुल टूटे हुए 11 माह बीत जाने के बाद भी निर्माण कार्य प्रारम्भ नही किया गया। ग्रामीणों ने मांग की है कि जल्द ही इस समस्या का समाधान किया जाए।

वाहन हो रहे दुर्घटना का शिकार

उक्त पुल के टूटने के बाद से पुल के पास से ही वैकल्पिक मार्ग से आवाजाही शुरू कर दी गई जो कि, बारिश में बन्द हो जाता है और दुर्घटना का कारण बन जाता है। वही मार्ग के दोनों ओर विभाग द्वारा पुल वाहनों को सचेत करने के लिए जो व्यवस्था की गई थी वो भी समाप्त हो गई, जिससे रात के अंधेरे में कई बार वाहन सीधे पुल पर प्रवेश कर दुर्घटना के शिकार हो चुके है। बीते 11 माह में तीन से चार दुर्घटना इस पुल पर हो चुकी है जिसके बाद भी लोकनिर्माण विभाग की नींद नही खुली है।

भाजपा नेता अजय जैन ने कहा कि, पूरे क्षेत्र में लोक निर्माण विभाग के कार्य अधूरे पड़े है, ग्रामीणों की समस्याओं से अधिकारियों का कोई लेना-देना नही है। लोक निर्माण विभाग में बैठे अधिकारी खुद कांग्रेस के शासन काल मे नियुक्त होकर आए थे, जो अब भाजपा के शासन में निष्क्रिय बन बैठे है। ऐसे निष्क्रिय अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई भी होना चाहिए।

निःशुल्क कंबल सेवा केन्द्र का शुभारंभ

गौतम ग्रुप की अनुठी पहल, सर्द रातों में गर्म कंबल देगी सहारा

माही की गूंज, पेटलावद।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आने वाले लोगो को अब ठंड से नही जूझना पड़ेगा। हमेशा नगर के सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में अग्रणी रहने वाले नगर के समाजसेवी गौतम ग्रुप के संचालक गौतम गहलोत एवं ग्रुप ने एक पहल करते हुए निशुल्क कम्बल वितरण की अनूठी पहल की है। मंगलवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में एक सादे समारोह को आयोजित करते हुए कंबल वितरण केन्द्र की शुरूआत की गई। इस केन्द्र को एम्बुलेंस चालक विजय चैहान और अस्पताल कर्मचारी लालसिंह गामड़ ने फिता काटकर एवं दीप प्रजव्वल कर निशुल्क कंबल सेवा केन्द्र का शुभारंभ किया गया। अब अस्पताल में पहुंचने वाले लोग जो रात्रि विश्राम यही करते है उन्हें निःशुल्क कंबल वितरीत कि जाएगी जो रात्री में उपयोग के बाद पूनः जमा करेंगें। इसके लिए शाम के समय से सुबह तक व्यक्ति कक्ष में मौजुद रहेगा जो जरूरत मंदों को कंबल उपलब्ध करवायेंगा। इस तरह से कडकडाती इस ठंड में मरीज के परिजनों के साथ हीं गरीब लोगो को जिनके पास रात में ठंड से बचने का कोई उपाय नहीं है, जिन्हें निशुल्क कंबल मिलने से राहत मिलेगी और बाजार से उन्हें पैसा खर्च कियें बिना हीं निशुल्क कंबल उपलब्ध हो जाएगे। गौतम ग्रुप के इस अनुठी पहल की पुरे नगर में प्रशसा हो रहीं है।

युवाओं को बेहतर और सरल रूप से रोजगार दिलाने का मेला आज

माही की गूंज, शुजालपुर। अजय राज केवट

शुजालपुर के युवाओं को बेहतर और सरल रूप से रोजगार के अवसर दिलाने के लिए आज प्रातः 11 बजे से दोहपर 3 बजे तक जेएनएस शासकीय महाविद्यालय शुजालपुर में रोजगार मेला आयोजित किया जाएगा। रोजगार कार्यालय एवं राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के संयुक्त तत्वावधान में रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा।

रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की प्रसिद्ध कंपनियां भी सहभागिता करेगी। रोजगार मेले में प्रतिभा सिंटेक्स पीथमपुर, यशस्वी एकेडमी फार स्किल इन्दौर, आईएलएएस इंस्टीटयूट इन्दौर, रिलाइंस जियो इन्फो डॉट कॉम शाजापुर, टीटीडी इन्टरप्राईजेस शाजापुर, अल्फा इन्टरप्राईजेस शाजापुर, भारतीय जीवन बीमा निगम शुजालपुर जैसी कंपनियां मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव्स, ट्रेनिज, सहायक, इंश्योरेंस एडवाइजर/प्रबंधक, सेल्स एवं मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव्स आदि पदों के लिए प्रारंम्भिक चयन करेंगी।

रोजगार मेला में तुरंत नौकरी प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर है। 5वी, 8वी, 10वीं, 12वीं, ग्रेजुएट एवं आईटीआई उत्तीर्ण एवं 18 से 35 वर्ष तक के आयु के आवेदक अपने समस्त प्रमाण-पत्रों एवं आधारकार्ड के साथ रोजगार मेले में आकर रोजगार, स्वरोजगार या प्रशिक्षण में चयन हेतु साक्षात्कार दे सकते हैं। साथ ही साथ रोजगार के नए आयामो से 10वीं, 12वीं, ग्रेजुएट छात्रों को रूबरू कराने के लिए अनुभवी काउंसलरों के द्वारा केरियर काउंसिलिंग की जाएगी। इसके अलावा सरकारी/गैरसरकारी नौकरियां प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं की एवं प्रश्नों के प्रारूपों की भी जानकारी दी जाएगी। यह रोजगार मेला कोविड-19 की जारी गाडलाईन के अनुरूप लगाया जा रहा है। साथ ही साथ ज्यादा से ज्यादा नौकरियां दिलाने के लिए कम्पनियों से ई-साक्षात्कार की भी व्यवस्था रहेगी।

पत्रकारों के धरने को मिल रहा नगर का जनसमर्थन

माही की गूंज, थांदला।

नगर परिषद थांदला की अनियमितता व भाई भतीजावाद के खिलाफपत्रकार समिति द्वारा आजाद चौक पर दिया जा रहा धरना प्रदर्शन तीसरे दिवस भी जारी रहा। धरना स्थल पर समिति द्वारा हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत की गई, नगरवासियों ने जमकर अपने गुस्से का इजहार कर हस्ताक्षर किए। गौरतलब है कि, परिषद द्वारा दुकानों के निर्माण के उद्यान पोस्ट ऑफिस की जमीन को परिषद में भाई भतीजावाद कर अपने ही चहेतों को दुकान आवंटित कर दी इसके खिलाफसमिति द्वारा धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। परिषद की अनियमितता के चलते तहसीलदार द्वारा आदेश जारी होने के 2 माह बाद भी आज दिनांक तक कोई भी कार्रवाई धरातल पर होती नजर नहीं आ रही है। प्रशासन के नुमाइंदे भ्रष्टाचार कर नगर को विनाश की ओर धकेलने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे है। धरना स्थल पर हस्ताक्षर अभियान में उमेश पीचा, डॉक्टर नंदन जैन, विजय सिंह राठौर, कमलेश लोढ़ा, जितेंद्र धामन, हरचंद भूरिया, कमल पीछा, कांतिलाल परमार के साथ कई अन्य लोगो ने भी समर्थन दिया है।

पेट्रोल पंप पर काम करने वाला कर्मचारी ही निकला चोर

माही की गूंज , बामनिया। शनिवार रात को अज्ञात चोरों द्वारा पेटलावद रोड स्थित पेट्रोल पंप पर खड़ी सुभाष मांडोत निवासी बामनिया की कार एमपी 45 सी 2307 चोरी कर ले गए थे। घटना की जानकारी सुबह लगी जब गाड़ी पम्प से गायब मिली और 10 किलोमीटर दूर दुर्घटनाग्रस्त थी। चोरी गया वाहन दुर्घटनाग्रस्त मिलने के बाद बामनिया पुलिस ने मामले में वाहन चोर को पकड़ने में कामयाबी हासिल की। चौकी प्रभारी सोलंकी ने बताया कि, वाहन चोरी के बाद पुलिस को पंप के कर्मचारी पर शक हुआ, पुलिस द्वारा गहन पूछताछ करने पर एक कर्मचारी ने कबूला की रात में उसने ऑफिस में कार की चाबी देखी व कार चोरी की नीयत से रात 1 बजे कार ले गया, बामनिया से 10 किलोमीटर दुर दुलाखेड़ी के आगे मोड़ पर गाड़ी नही सम्हलने से दुर्घटनाग्रस्त हो गई, डर के मारे वो कार छोड़ कर भाग गया व सुबह वापस पम्प पर काम करने के लिए आ गया। चौकी प्रभारी मोहनसिंह सोलंकी ने बताया कि, आरोपी कैलाश पिता गणेश निवासी बोरपाडा को गिरफ्तार कर धारा 389 के तहत न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

वही चौराहे पर चल रही चर्चा में सामने आ रहा है कि, आरोपी कैलाश के साथ अन्य दो-तीन साथी उक्त कार चोरी की घटना में शामिल थे परन्तु पुलिस ने अन्य मामलो की तरह खर्चा-पानी लेकर एक को ही आरोपी बना दिया।

नगर परिषद अध्यक्ष के घर से मोटरसाइकिल चोरी

चक्काजाम के साथ थाने के घेराव की चेतावनी

माही की गूंज, शुजालपुर। पोलायकला पुलिस की निष्क्रियता के चलते क्षेत्र में अपराधिक तत्व अत्यधिक सक्रिय हो गए हैं व चोरी की घटनाओ में वृद्धि हुई है, पिछली दर्जनों चोरियों का खुलासा अभी हुआ नहीं है कि, चोरों ने एक बार फिर पोलायकला के पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष व भाजपा नेता मुकेश चौधरी के घर से पत्रकार रजनीश भमुरिया की मोटरसाइकिल चोरी करके प्रशासन को खुला चैलेंज दिया है। सोमवार की शाम 8 से साढे 8 बजे के बीच घटना को अंजाम दिया। घटना के तीसरे दिन नगरवासियों ने पुलिस थाना अवंतिपुर बड़ोदिया पहुंचकर थाना प्रभारी राम गोपाल वर्मा को ज्ञापन सोपकर कहा कि, यदि 3 दिन के अंदर गाड़ी वापस नहीं आती है और चोरी का खुलासा नहीं होता है तो पोलायकला बस स्टैंड पर नगर के समस्त युवा आमजन अनशन, धरना, आंदोलन या चक्का जाम करने के लिए बाध्य होंगे, जिसकी समस्त जवाबदारी पुलिस प्रशासन की होगी।

संपादकीय

कोरोना की नई नस्ल से भारत को सावधान रहने की जरूरत

कमोबेश भारत कोरोना वायरस से राहत महसूस कर रहा था। महामारी के बीते 14 सप्ताहों में से 13 हफ्ते ऐसे थे कि कोरोना लगातार घट रहा था। बीते 6 सप्ताहों का आकलन करें, तो संक्रमण 17–20 फीसदी तक कम हुआ है। संक्रमित मरीजों की संख्या और मौतें महत्त्वपूर्ण स्तर तक घटी हैं, लेकिन नए साल से पहले ही एक बहुत बुरी खबर ने दोबारा चौकस और आशंकित होने को बाध्य किया है। ब्रिटेन में कोरोना वायरस की नई नस्ल 70 फीसदी अधिक संक्रामक पाई गई है। लंदन में इसके 60 फीसदी मामले बताए जा रहे हैं। ब्रिटेन के अलावा जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क, स्कॉटलैंड, नीदरलैंड, बेल्जियम, पोलैंड, स्पेन, स्विट्जरलैंड, इटली, रूस, जोर्डन, हांगकांग आदि 45 देशों में वायरस की नई नस्ल की मौजूदगी पाई गई है। इतने ही देशों ने ब्रिटेन से आने और वहां जाने वाली उड़ानों को रद्द कर दिया है। सऊदी अरब, कुवैत और ओमान ने अपनी सीमाएं पूरी तरह बंद कर ली हैं। सावधानी बरतते हुए भारत को भी 31 दिसंबर की रात 11.59 बजे तक विमान सेवाओं को रद्द करना पड़ा है। हालांकि अभी तक वायरस की नई किस्म के घातक प्रभावों के साक्ष्य नहीं मिले हैं। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डा. हर्षवर्द्धन ने तो सब कुछ 'काल्पनिक' करार देते हुए घबराने और दहशत में न आने का आह्वान किया है।

उड़ानें रद्द करने से ही भारत और ब्रिटेन के बीच 60 विमान सेवाएं रद्द होंगी, क्योंकि दोनों देश यातायात के जरिए बेहद करीब हैं। बहरहाल ब्रिटेन, जर्मनी और यूरोप के कुछ देशों में लॉकडाउन और पाबंदियों को लागू कर दिया गया है। भारत में महाराष्ट्र राज्य में रात 11 बजे से सुबह 6 बजे तक का कर्फ्यू घोषित किया गया है। इस दौरान जो अध्ययन सामने आए हैं, उनके मुताबिक डेनमार्क में ऊदबिलावों से यह वायरस फैला है। नतीजतन वहां करीब 1.70 करोड़ ऊदबिलावों को तुरंत मारने की योजना तैयार की गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी स्वीकार किया है कि कोरोना वायरस की नई नस्ल दुनिया के लिए खतरनाक जोखिम साबित हो सकता है। यदि ऊदबिलाव से इनसान तक यह वायरस फैलता रहा है, तो ऐसे इनसानों पर टीके का प्रभाव भी सवालिया होगा। ऐसे इनसानों पर कोरोना टीके का परीक्षण भी नहीं किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की ही मुख्य वैज्ञानिक डा. सौम्या स्वामीनाथन का कहना है कि अभी इस निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी कि वायरस की नई नस्ल संभावित टीकों की प्रभावशीलता कम कर सकती है। भारत में विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोना के 4000 से अधिक प्रकार दुनिया में दर्ज किए जा चुके हैं। उनमें जो बदलाव देखे गए हैं, वे बहुत छोटे हैं। वे एक स्थान से दूसरे स्थान और एक शरीर से दूसरे शरीर में पहुंचने पर स्वाभाविक रूप से आते हैं। इस प्रक्रिया में वायरस के लाखों प्रतिरूप तैयार हो सकते हैं। चूंकि आनुवंशिकी संरचना में गंभीर बदलाव नहीं हैं, लिहाजा उनका प्रभाव घातक नहीं हो सकता। अधिकतर वैज्ञानिक और चिकित्सक मान रहे हैं कि भारत में प्रस्तावित टीकाकरण की प्रक्रिया पर वायरस की नई नस्ल का कोई खास असर नहीं होगा। बल्कि नए संक्रमित मामलों में भी कोरोना टीका असरदार साबित हो सकता है।

आईसीएमआर के पूर्व वैज्ञानिक डा. रमन गंगाखेड़कर का भी यही मानना है। वह उसका कारण बताते हैं कि प्रोटीन पर आधारित टीके अलग-अलग किस्म के एंटीबॉडी बनाते हैं। प्रोटीन खराब हुआ, तो इसका मतलब यह नहीं है कि सभी प्रोटीन खराब होंगे। भारत बायोटेक और रूस का स्पूतनिक-वी टीके निष्क्रिय वायरस से बने हैं, लिहाजा ये नए प्रकार पर असरदार साबित होंगे। एम्स दिल्ली के निदेशक डा. रणदीप गुलेरिया का मानना है कि कोरोना वायरस की नई नस्ल मानव कोशिकाओं में ज्यादा तेजी से चिपक जाती है, लिहाजा यह तेजी से फैल रहा है। बहरहाल चीन से जो वायरस उड़ा था, उसने दुनिया को मृतप्राय: किया है। करीब 8 करोड़ संक्रमण के मामले कम नहीं होते। मानव सदियों से वायरस की न जाने कितनी मार झेलता आया है। अनगिनत मौतें भी हुई हैं, लेकिन कोरोना के मौजूदा दौर ने बहुत कुछ तोड़ कर रख दिया है। शुरुआती प्रहार और तालाबंदी के कारण अर्थव्यवस्थाएं ध्वस्त हुई हैं। अब नई नस्ल की खबर से ही भारतीय बाजार में 7 माह की सबसे बड़ी गिरावट सामने आई है। निवेशकों के करीब 6.59 लाख करोड़ रुपए घटे हैं। सेंसेक्स 1406 अंक नीचे बंद हुआ है। अभी तो खबर भर है। देखिए भविष्य में क्या होता है!

धर्म और राष्ट्रवाद की घुट्टी से मुश्किल में ममता

प्रमोद भार्गव

गृहमंत्री अमित शाह के पश्चिम बंगाल के दो दिनों के दौरे ने तृणमूल कांग्रेस की मुखिया एवं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। क्रांतिकारी खुदीराम बोस के स्मारक को नमन करके जहां शाह ने राष्ट्रवाद का संदेश दिया, वहीं काली और महामाया मंदिरों में पूजा करके धर्म की घुट्टी पिलाने का काम कर दिया। दिल्ली सीमा पर किसान कृषि कानूनों को लेकर आंदोलनरत हैं, इसके उत्तर में शाह ने एक किसान के घर भोजन करके यह जताने की कोशिश की है कि अन्नदाता सरकार की प्राथमिकता में हैं। तृणमूल कांग्रेस के एक सांसद, दस विधायक, नौ पार्षद, 45 सहकारी बैंक और निकायों के अध्यक्ष तथा दो जिला पंचायत अध्यक्षों ने अमित शाह की मिदनापुर की सभा में भाजपा में विलय करके यह जता दिया कि तृणमूल चौतरफा टूट रही है।

शुभेंदु अधिकारी के भाजपा में शामिल होने से करीब 80 विधानसभा सीटें प्रभावित होने की आस भाजपा को बंधी है। ये शुभेंदु वही हैं, जो नंदीग्राम व सिंगूर के शिल्पकार थे और कांग्रेस छोड़कर आई ममता को बंगाल के सत्ता-सिंहासन पर बिठाने का काम किया था। किंतु वंशवाद की राजनीति का अभिशाप अब ममता समेत समूची तृणमूल को झेलना पड़ रहा है। ममता ने शुभेंदु की जगह अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी को सत्ता व संगठन का हकदार बनाने का द्वार खोल दिया, जो ममता समेत समूची तृणमूल पर भारी पड़ रहा है। इसलिए शाह का यह कहना सही लगता है कि चुनाव आने तक ममता अकेली रह जाएंगी।

एक ओर पश्चिम बंगाल में हिंसा चरम पर है, दूसरी ओर एक के बाद एक तृणमूल कांग्रेस के सांसद, विधायक व अन्य कार्यकर्ता भाजपा के पाले में समाते जा रहे हैं। कभी वामपंथियों की मांद में घुसकर दहाड़ने वाली ममता अपने ही घर में अकेली पड़ती दिखाई दे रही हैं। राज्य में अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले जिस तरह एक-एक करके तृणमूल के दिग्गज नेता पार्टी छोड़ रहे हैं, उससे लगता है ममता घोर राजनीतिक संकट से घिरती जा रही हैं। ममता ने वामपंथियों के जबड़े से जब सत्ता छीनी थी, तब उम्मीद बनी थी कि वे अनूठा नेतृत्व देकर बंगाल में विकास और रोजगार को बढ़ावा देंगी। लेकिन दस साल के शासन में वे वंशवाद, मुस्लिम तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार और हिंसा से बंगाल को मुक्ति नहीं दिला पाईं। यही कारण रहा कि अमित शाह और कैलाश विजयवर्गीय की रणनीति के चलते तृणमूल और ममता का भविष्य अंधेरे की ओर बढ़ रहा है। ममता को सबसे बड़ा झटका शुभेंदु अधिकारी के अलग होने से लगा है। इसके बाद ममता की देहरी लांघने का सिलसिला चल पड़ा है। इसकी एक वजह ममता का तानाशाही आचरण तो है ही, राजनीति में तकनीक के जरिए जीत के खिलाड़ी माने जाने वाले प्रशांत किशोर का पार्टी में बढ़ता दखल भी है।

हाल के दिनों में तृणमूल को जिन दिग्गज नेताओं ने छोड़ा, उनमें सबसे ताकतवर शुभेंदु अधिकारी हैं। शुभेंदु के पिता शिशिर अधिकारी भी विधायक और सांसद रह चुके हैं। शुभेंदु के एक भाई सांसद और दूसरे नगरपालिका अध्यक्ष हैं। इस तरह इनके परिवार का छह जिलों की 80 से ज्यादा सीटों पर असर है। उनके समर्थक जितेंद्र तिवारी ने भी आसनसोल में नगर निगम के प्रशासक सहित पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दिया है। तिवारी पांडेबेश्वर विधानसभा क्षेत्र से विधायक थे। तीसरे स्थान पर शीलभद्र दत्त आते हैं, जो 24 परगना जिले के बैरकपुर से विधायक हैं। उन्होंने प्रशांत किशोर के काम करने के तरीके को लेकर नाराजगी जताई है। कबीरुल इस्लाम ने पार्टी की अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के महासचिव पद से इस्तीफा दिया है।

इन नामों से पहले पार्टी छोड़ने वाले दिग्गज नेता मुकुल राय हैं। मुकुल राय को हाल ही में भाजपा का उपाध्क्ष बनाया गया है। शोभन चटर्जी ने भी भाजपा का दामन थामा है। मिहिर गोस्वामी टीएमसी के खिलाफ मोर्चा खोलने वाले नेता हैं। उन्होंने नवंबर में भाजपा का दामन थामा था। वे कूच बिहार दक्षिण से विधायक थे। अनुपम हाजरा बोलपुर से टीएमसी सांसद रह चुके हैं। वे अब भाजपा में राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। अर्जुन सिंह, ममता बनर्जी के साथ अनबन के बाद 2019 में आम चुनाव से ठीक पहले टीएमसी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए और अब बैरकपुर लोकसभा सीट से भाजपा के सांसद हैं। इसी कड़ी में शंकुदेब पांडा, सब्यसाची दत्ता, सौमित्र खान, बनाश्री मैती, सैकत पंजा आदि ने भाजपा का दामन थाम लिया। शाह की सभा में तृणमूल के ही नहीं सीपीआई के अशोक डिंडा, सीपीएम के तापसी मंडल और दिपाली विश्वास तथा कांग्रेस के सुदीप मुखर्जी भी भाजपा में शामिल हुए हैं। मसलन विचारधारा चाहे वामपंथी रही हो या गांधीवादी अब सब भाजपा की राष्ट्रवादी वैचारिकता के अनुयायी बनने में ही भविष्य देख रहे हैं।

सर्वहारा और किसानों की पैरवी करने वाले वाममोर्चा ने जब सिंगूर और नंदीग्राम के किसानों की खेती की जमीनें टाटा को दीं तो इस जमीन पर अपने हक के लिए उठ खड़े हुए किसानों के साथ ममता आ खड़ी हुईं। मामता कांग्रेस की पाठशाला में ही पढ़ी थीं। जब कांग्रेस उनके कड़े तेवर झेलने और संघर्ष में साथ देने से बचती दिखी तो उन्होंने कांग्रेस से पल्ला झाड़ा और तृणमूल कांग्रेस को अस्तित्व में लाकर वामदलों से भिड़ गईं। इस दौरान उनपर कई जानलेवा हमले हुए लेकिन उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं खींचे। जबकि 2001 से लेकर 2010 तक 256 लोग सियासी हिंसा में मारे गए। यह काल ममता के रचनात्मक संघर्ष का चरम था, जिसके मुख्य रचनाकार शुभेंदु अधिकारी थे, जो अब भाजपा के पाले में हैं। इसके बाद 2011 में बंगाल में विधानसभा चुनाव हुए। ममता ने मां, माटी और मानुष का नारा लगाकर वाममोर्चा का लाल झंडा उतारकर तृणमूल की विजय पताका फहरा दी।

अब बंगाल की माटी पर एकाएक उदय हुई भाजपा ने ममता के वजूद को संकट में डाल दिया है। बंगाल में करीब 27 फीसदी मुस्लिम मतदाता हैं। इनमें 90 फीसदी तृणमूल के खाते में जाते हैं। इसे तृणमूल का पुख्ता वोटबैंक मानते हुए ममता ने अपनी ताकत मोदी व भाजपा विरोधी छवि स्थापित करने में खर्च दी। इसमें मुस्लिमों को भाजपा का डर दिखाने का संदेश भी छिपा था। किंतु इसकी विपरीत प्रतिक्रया हिंदुओं के स्वस्फूर्त ध्रुवीकरण के रूप में दिखाई देने लगी। बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठिए एनआरसी लागू होने के बाद भाजपा को वजूद के लिए खतरा मानकर चल रहे हैं, नतीजतन बंगाल के चुनाव में हिंसा का उबाल आया हुआ है। इस कारण बंगाल में जो हिंदीभाषी समाज है वह भी भाजपा की तरफझुका दिखाई दे रहा है।

हैरानी इस बात पर है कि जिस ममता ने परिवर्तन का नारा देकर वामपंथियों के कुशासन और अराजकता को चुनौती दी थी वही ममता इसी ढंग की भाजपा की लोकतांत्रिक प्रक्रिया से बौखला गई हैं। उनके बौखलाने का एक कारण यह भी है कि 2011-2016 में उनके सत्ता परिवर्तन के नारे के साथ जो वामपंथी और कांग्रेसी कार्यकर्ता आ खड़े हुए थे, वे भविष्य की राजनीतिक दिशा भांपकर भाजपा का रुख कर रहे हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

मोतीलाल वोरा: बड़े आदमी

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

20 दिसंबर को कांग्रेस के नेता श्री मोतीलाल वोरा का 93 वाँ जन्म दिन था और 21 दिसंबर को उनका निधन हो गया। वे न तो कभी राष्ट्रपति बने और न ही प्रधानमंत्री लेकिन क्या बात है कि लगभग सभी राजनीतिक दलों ने उनके महाप्रयाण पर शोक व्यक्त किया? यह ठीक है कि वे देश या कांग्रेस के किसी बड़े (सर्वोच्च) पद पर कभी नहीं रहे लेकिन वे आदमी सचमुच बड़े थे।

उनके- जैसे बड़े लोग आज की राजनीति में बहुत कम हैं। वोराजी जैसे लोग दुनिया के किसी भी स्वस्थ लोकतंत्र में आदर्श नेता की तरह होते हैं। वे अपनी पार्टी और विरोधी पार्टियों में भी समान रुप से सम्मानित और प्रिय थे। वे नगर निगम के पार्षद रहे, म.प्र. के राज्यमंत्री रहे, दो बार वहीं मुख्यमंत्री बने, उ.प्र. के राज्यपाल बने और चार बार राज्यसभा के सांसद रहे। कांग्रेस पार्टी के वे 18 वर्ष तक कोषाध्यक्ष भी रहे।असलियत तो यह कि ज्यादातर नेताओं की तरह उनमें न तो अहंकार था और न ही पदलिप्सा। उन्हें जो मिल जाए, उसी में वे खुश रहते थे। उनकी दीर्घायु और सर्वप्रियता का यही रहस्य है। उनका-मेरा संबंध पिछले लगभग 60 वर्षों से चला आ रहा था। वे रायपुर में सक्रिय थे और मैं इंदौर में। मैं कभी किसी दल में नहीं रहा लेकिन वोराजी डॉ. राममनोहर लोहिया की संयुक्त समाजवादी पाटी के कार्यकर्ता थे।

मुझे जब अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन का मंत्री बनाया गया तो मैंने वोराजी को म.प्र. का प्रभारी बना दिया। जब मैंने नवभारत टाइम्स में काम शुरु किया तो उन्हें अपना रायपुर संवाददाता बना दिया। वे इतने विनम्र और सहजसाधु थे कि जब भी मुझसे मिलने आते तो मेरे कमरे के बाहर चपरासी के स्टूल पर ही बैठ जाते थे। मुख्यमंत्री के तौर पर वे बिना सूचना दिए ही मेरे घर आ जाते थे। 1976 में मैंने जब हिंदी पत्रकारिता का महाग्रंथ प्रकाशित किया तो उन्होंने आगे होकर सक्रिय सहायता की। स्वास्थ्य मंत्री के तौर पर उन्होंने पत्रकारों के इलाज में सदा फुर्ती दिखाई। वे उम्र में मुझसे काफी बड़े थे लेकिन राज्यपाल बन जाने पर भी मुझे भरी सभा में 'बॉस' कहकर संबोधित करते थे। वे मेरे संवाददाता थे और मैं उनका सम्पादक लेकिन मैं हमेशा उनके गुण एक शिष्य या छोटे भाई की तरह ग्रहण करने की कोशिश करता था। वोराजी को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि!

एक सलाह

कभी -कभी हम गलत नहीं होते, बस वो शब्द हमारे पास नहीं होते, जो हमें सही साबित कर सके!

काम की बात

अपना वजूद ऐसा बनाओं कि कोई आपको छोड़े तो कभी भूला ना सके।

चाणक्य नीति

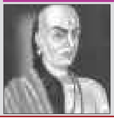

मूर्खो के साथ मित्रता नहीं रखनी चाहिए उन्हें त्याग देना ही उचित है, क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से वे दो पैरों वाले पशु के सामान हैं,जो अपने धारदार वचनो से वैसे ही हदय को छलनी करता है जैसे अदृश्य काँटा शारीर में घुसकर छलनी करता है .

राज्य के चुनाव और संघीय व्यवस्था से जुड़े सवाल

भारतीय जनता पार्टी ने अपनी पूरी ताकत पश्चिम बंगाल में झोंक दी है। चुनावों की जिस तरह पार्टी तैयारी करती है और उसके लिए उसकी जो खास शैली अब तक दिखी है, उसके मद्देनजर इसमें कोई अचरज की बात नहीं है। लेकिन इस क्रम में जिस तरह एक बार फिर उसने संघीय व्यवस्था से जुड़े सवाल को खड़ा कर दिया है, वह जरूर पूरे देश की चिंता का विषय है। यही कारण है कि अशोक गहलोत, अमरिंद सिंह, भूपेश बघेल से लेकर आम आदमी पार्टी और डीएमके तक ने इस मामले में केंद्र के रुख का विरोध किया है। मुद्दा यह है कि भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के काफिले पर हमले के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय ने उन तीन वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों को अचानक दिल्ली तलब करने का निर्देश दे दिया, जिनके पास दक्षिण 24-परगना जिले में जेपी नड्डा की सुरक्षा की जिम्मेदारी थी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इन तीनों अधिकारियों को भेजने से इनकार कर दिया है। घटना के अगले ही दिन केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्य के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को समन भेज कर 14 दिसंबर को दिल्ली हाजिर होने का निर्देश दिया था।

लेकिन राज्य सरकार ने इन दोनों अधिकारियों को दिल्ली ना भेजने के अपने रुख पर अडिग है। गौरतलब है कि केंद्र और राज्य सरकार के बीच अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों को लेकर तनातनी का यह पहला मौका नहीं है। ऐसे विवाद हाल में बढ़ते गए हैं। जबकि भारतीय संविधान में संघीय गणराज्य की परिकल्पना के तहत राज्यों की स्वायत्तता का पूरा ख्याल रखा गया है। अखिल भारतीय सेवाएं भी उसी कड़ी में आती हैं, जहां इन अधिकारियों की नियुक्ति तो केंद्रीय स्तर पर होती है, लेकिन उनकी तैनाती उनके कैडर राज्य में होती है। फिर उनके तबादले और इस तरह के दूसरी प्रशासनिक जिम्मेदारी राज्यों पर होती है। नियमों के मुताबिक जब तक राज्य में तैनात किसी अधिकारी को संबंधित राज्य सरकार रिलीव नहीं कर देती, तब तक केंद्र सरकार उनकी प्रतिनियुक्ति नहीं कर सकती। ऑल इंडिया सर्विसेज 1969 के नियम 7 के अनुसार राज्य सरकार के तहत काम करने वाले सिविल अधिकारियों पर केंद्र कोई एक्शन भी नहीं ले सकता। यही नहीं, किसी विशेष स्थिति में एक्शन लेने की नौबत आ जाए, तो भी इसके लिए केंद्र और राज्य दोनों की सहमति जरूरी होती है। इसलिए यहां सवाल सवाल सिर्फपश्चिम बंगाल का नहीं है। बल्कि यह केंद्र और राज्य के संबंधों से जुड़ा हुआ है। इसलिए केंद्र का नजरिया संघीय ढांचे की भावना के खिलाफहै तो जाहिर है कि इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे।

करो आंदोलन, सड़कों को बख्शो

किसी भी लोकतांत्रिक देश में नागरिकों को अपनी जायज मांगों को मनवाने के लिए आंदोलन का अधिकार है। यह अधिकार मिलना भी चाहिये और यही लोकतंत्र की आत्मा है। जरूरी नहीं कि हर नागरिक सरकार के हरेक फैसले से खुश हों। इसलिए आंदोलन ही उनके पास विकल्प भी बचता है। लेकिन इस क्रम में आंदोलनकारियों का मुख्य मार्गों और हाईवे को जाम करना गंभीर अलोकतांत्रिक मामला है। इससे उन आम लोगों को भारी असुविधा होती है, जो बहुमत में हैं पर आंदोलन का हिस्सा नहीं हैं। इस बहुसंख्य पीड़ितों में अस्पतालों में इलाज के लिए जाने वाले रोगियों से लेकर कारोबारी, नौकरीपेशा, विद्यार्थी और दूसरे तमाम लोग शामिल होते हैं। इसी कारण शायद बहुसंख्यक शेष लोगों का आंदोलन को नैतिक समर्थन प्राप्त नहीं हो पाता है।

मौजूदा किसान आंदोलन को ही लें। इसके कारण दिल्ली की हरियाणा और उत्तर प्रदेश से लगने वाली सीमा पर किसानों ने सड़कों पर डेरा जमाया हुआ है। उनकी मांगों पर विचार भी हो रहा है। सरकार बार-बार कह रही है कि वह उनके साथ किसी भी तरह का अन्याय नहीं करेगी। खेती और किसान के बिना भारत की कल्पना संभव नहीं। किसानों के सड़कों पर बैठने के कारण आंदोलन का असर दिल्ली से दूर तक हो रहा है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में किसानों के प्रदर्शन का असर दिख रहा है। मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत में भी अनेकों किसान सड़कों पर उतर गए हैं और हाइवे जाम हो रहे हैं। भारतीय किसान यूनियन की ओर से कृषि कानून के खिलाफये किसान सड़कों पर उतरे हुए हैं। जिसका असर दिखना भी शुरू हो गया है। अब किसानों की ओर से दिल्ली-देहरादून हाइवे पर जाम लगाया जा रहा है। किसानों की मांग है कि कृषि कानूनों का वापस होना जरूरी है। यह एमएसपी और मंडी को लेकर स्थिति साफकरने की भी मांग कर रहे हैं।

शाहीन बाग धरना और दिल्ली का कष्ट

आपको याद होगा कि दक्षिण दिल्ली के शाहीन बाग में राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर और नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में चले विरोध-प्रदर्शन के दौरान सड़क पर अतिक्रमण कर बैठी जिद्दी भीड़ के कारण महीनों तक दिल्ली को भारी कष्ट हुआ था। अंत में उन्हें सड़क से हटाने के मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला दे दिया। अपने अहम फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि विरोध प्रदर्शन एक सीमा तक हों, अनिश्चितकाल तक नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा था कि ष्धरना-प्रदर्शन के दौरान सार्वजनिक स्थलों को नहीं घेरा जाए। इससे आम जनता के अधिकारों का हनन होता है। कोई भी प्रदर्शनकारी समूह या व्यक्ति सिर्फ विरोध प्रदर्शनों के बहाने सार्वजनिक स्थानों पर अवरोध पैदा नहीं कर सकता है और सार्वजनिक स्थल को रोक नहीं सकता है।ष् माफकरें, शाहीन बाग के प्रदर्शनकारी तो हद ही कर रहे थे। कोरोना वायरस के कहर की अनदेखी करने वाले शाहीन बाग में बैठे प्रदर्शनकारियों को अंततः दिल्ली पुलिस ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर जबरदस्ती हटाया था।

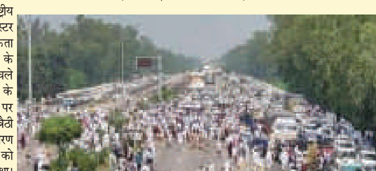

वे कोरोना वायरस से बेपरवाह धरने को खत्म करने की तमाम अपीलों को भी खारिज कर रहे थे। बेहद विषम हालातों में इनकी जिद् के कारण सारा देश इनसे नाराज था। इनसे मुस्लिम समाज के बुद्धिजीवियों से लेकर समाज के अन्य सभी वर्गों के महत्वपूर्ण लोग धरने को खत्म करने के लिए हाथ जोड़ रहे थे। पर धरने देने वाली औरतें किसी की भी सुनने को तैयार नहीं थीं। यह तो चोरी और ऊपर से सीनाजोरी वाली स्थिति थी। पहली बात यह कि शाहीन बाग में नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफधरना ऐसे स्थान पर चल रहा था, जहां पर उसे चलना ही नहीं चाहिए था। पर शुरू में ही प्रशासन और दिल्ली पुलिस की लापरवाही और नाकामी के कारण ये औरतें धरने पर बैठ गईं या कुछ दिग्भ्रमित समाज विरोधी तत्वों के द्वारा बैठा दी गईं। उसके बाद इन्होंने पूरी सड़क घेर ली और अपनी जगह से हिलने के लिए तैयार नहीं थीं। सही बात यह है कि धरना या प्रदर्शन इस तरह से हो ताकि जो इसका हिस्सा नहीं हैं, उन्हें दिक्कत न हो।

जरा याद करें 32 साल पहले यानी 1988 के महेन्द्र सिंह टिकैत के किसान आंदोलन की। टिकैत के नेतृत्व में लाखों किसान राजधानी के दिल्ली बोट क्लब पर आ गए थे। कुछ उसी अंदाज में जैसे आजकल किसान दिल्ली में अपनी मांगों के समर्थन में आए हुए हैं। फर्क इतना ही है कि इसबार किसान बोट क्लब के स्थान पर दिल्ली की सीमाओं पर स्थित हाईवे पर बैठे हैं। वह अक्टूबर का महीना था। जाड़ा दस्तक देने लगा था। राजधानी के बोट क्लब पर लगभग सात लाख से ज्यादा किसानों को संबोधित करते हुए भारतीय किसान यूनियन के नेता महेन्द्र सिंह टिकैत ने कहा ष्खबरदार इंडिया वालों। दिल्ली में भारत आ गया है।ष् दिल्ली पहली बार एक सशक्त किसान नेता को देख रही थी।

बोट क्लब पर हुक्के की गुड़गुड़ाहट

आरके सिन्हा

बोट क्लब और इंडिया गेट पर ही किसान, भोजन तैयार करने के लिए भट्टियां सुलगाने लगे थे। वे हुक्के की गुड़गुड़ाहट के बीच दिल्ली से अपनी मांगों को माने जाने से पहले टस से मस होने के लिए तैयार नहीं थे। रोज देश के तमाम विपक्षी नेता टिकैत से मिलने आ रहे थे। महाराष्ट्र के असरदार किसान नेता शरद जोशी भी टिकैत के साथ धरना स्थल पर बैठे थे। टिकैत की सरपरस्ती में भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) ने केन्द्र सरकार के सामने अपनी कुछ मांगे रखी थी। वे गन्ने का अधिक समर्थन मूल्य के अलावा मुफ्त बिजली-पानी की मांग कर रहे थे। राजधानी के दिल में लाखों किसानों की उपस्थिति से सरकार की पेशानी से पसीना छूटने लगा था। पर आम जनता को कोई परेशानी नहीं हुई थी क्योंकि किसानों ने सड़कों को नहीं घेरा था।

दरअसल गुजरे कुछ बरसों से प्रदर्शनकारी राजमार्गों को घेरने लगे हैं। इस कारण आम जनता को भारी कष्ट होता है। देखिए, अगर लोकतंत्र में आपको अपनी मांगों को मनवाने के लिए आंदोलन का अधिकार है, तो बाकी को यह भी अधिकार है कि वह आपके आंदोलन से दूर रहे। उस इंसान के हितों का सम्मान भी तो आंदोलनकारियों को करना ही होगा।

अपने हित -अहित से किसान बेखबर और सरकार बाखबर ?

किसान आंदोलन दिन प्रतिदिन और अधिक तेज होता जा रहा है। राजधानी दिल्ली के चारों ओर किसानों का जमावड़ा व उनका दायरा रोज बढ़ता ही जा रहा है। किसान संगठनों के प्रतिनिधियों व केंद्र सरकार के बीच चली 5 दौर बातचीत बिना किसी नतीजे पर पहुंचे हुए,समाप्त होने के बाद जहाँ किसान आंदोलन ने और गति पकड़ ली है वहीं सरकार भी श्हठ मोडश् में नजर आने लगी है। सरकार द्वारा संसद में बिना बहस के पारित कराए गए किसान अध्यादेश के समर्थन में किसान आंदोलन शुरू होने से पूर्व जिस प्रकार पूरे देश के समाचार पत्रों को करोड़ों रूपये का संपूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन देकर देश को विशेषकर किसानों को यह समझने की कोशिश की गयी थी नए कृषि कानून उनके हित में हैं तथा इनके विरुद्ध श्दुष्प्रचार श् व झूठ फैलाया जा रहा है। एक बार फिर से जनता के ही सैकड़ों करोड़ रूपये खर्च कर ठीक वैसा ही विज्ञापन पुनः प्रकाशित कराया गया है। श्अन्नदाता की समृद्धि के लिए समर्पित सरकार-नए भारत का निर्माण,सबसे पहले किसानश् शीर्षक के इस विज्ञापन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन कि -श्भारत को अपने अन्नदाताओं पर बहुत गर्व है। वे देश का पेट पालने के लिए दिन रात काम करते हैं। हम अपने किसानों को सशक्त करने के लिए सुधारों और दूसरे अन्य उपायों के जरिये कृषि क्षेत्र को मजबूत करने में जुटे हैंश,उद्धृत किया गया है।

किसानों को समझाने बुझाने वाला इसी तरह का खर्चीला विज्ञापन जब आंदोलन जारी होने से पूर्व प्रकाशित हुआ और वह विज्ञापन भी किसानों को आंदोलन की राह अख्तियार करने से न रोक सका फिर आखिर आंदोलनरत किसानों पर यह विज्ञापन कितना असर डाल पाएगा इस बात का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। इसी तरह सरकार ने किसान आंदोलन शुरू होने से पहले भी अपने मंत्रियों व जन प्रतिनिधियों को किसानों के बीच गांव गांव जाकर नए कृषि कानूनों के बारे में समझाने की योजना बनाई थी। परन्तु कई जगह भाजपा के इन मंत्रियों व जन प्रतिनिधियों को किसानों के भारी रोष का सामना करना पड़ा था। अब एक बार फिर भाजपा किसानों के बीच जाने की योजना बना रही है। यहां भी यह सवाल उठना जरूरी है कि सरकार द्वारा विज्ञापनों में दी गयी अपनी सफाई और उसके अनुसार उसके विरोधियों द्वारा नए कृषि कानूनों के बारे में फैलाए जा रहे श्झूठश् व श्भ्रमश् के बारे में सरकार किसान नेताओं को अपनी छः दौर की चली बात चीत में अपनी नीयत,अपने इरादों तथा विज्ञापनों में प्रकाशित होने वाले बिंदुओं को लेकर उनमें विश्वास क्यों नहीं पैदा कर पाई ?

अब तक सरकार व किसान संगठनों के मध्य चली बातचीत व दोनों पक्षों के रवैये से तो साफ नजर आ रहा है कि भले ही सरकार किसान हितों की बातें व दावे क्यों न करे परन्तु किसानों को संदिग्ध लगने वाले इन कृषि अध्यादेशों को वापस न लेने के फैसले की जिद पर अड़े रहकर सरकार पूँजीपतियों के पक्ष में खड़ी नजर आ रही है तो दूसरी ओर किसान संगठन प्रधानमंत्री मंत्री सहित अदानी व अंबानी के बार बार पुतले फूँक कर तथा इनका व्यवसायिक बहिष्कार कर साफतौर से यह सन्देश दे रहे हैं कि वे इन नए तीनों कृषि अध्यादेशों की बारीकियों,इनके दूरगामी परिणामों यहां तक कि सरकार की श्नीयतश् व उसके श्इरादोंश् से भी

भली भांति वाकिफ हैं। बार बार सरकार के जिम्मेदारों द्वारा यह दोहराया जाना कि किसानों को बहकाया या भ्रमित किया जा रहा है यह दरअसल किसानों की सूझ बूझ को कम कर आंकने जैसा है। खास तौर पर पंजाब,हरियाणा,राजस्थान व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उन किसानों को नासमझ समझना जो अपने घर परिवार से देश का प्रहरी सैनिक पैदा कर श्जय जवान -जय किसान श्की भारतीय अवधारणा को भी साकार करते हैं?

सत्ता द्वारा किसानों की नए कृषि अध्यादेशों को वापस लेने की दो टूक मांग से देश का ध्यान भटकाने के लिए अनेक हथकंडे प्रयोग में लाए जा रहे हैं। सत्तागोदी मीडिया आई टी सेल का अदृश्य संयुक्त नेटवर्क कभी इस आंदोलन को खालिस्तान से जोड़ने की कोशिश करता है तो कभी देश के श्अन्नदाताओंश् के इस आंदोलन की फंडिंग पर सवाल खड़ा करता है। कभी किसान विरोधियों को इस आंदोलन में शाहीन बाग के लोग सक्रिय दिखाई देते हैं तो कभी यह आंदोलन देश के किसानों का नहीं बल्कि केवल पंजाब के श्सिख समुदायश् का आंदोलन दिखाई देता है। कभी इन्हें लगता है कि विपक्षी दल इन्हें भड़का रहे हैं तो कभी यह आंदोलनकारियों की देग में बिरयानी चढ़ी देखने लगते हैं। परन्तु किसानों को अपने लिए अहितकर व निजी क्षेत्रों के लिए हितकारी लगने वाले इन कानूनों को वापस न लेने के पीछे इनकी क्या मजबूरी है यह जाहिर नहीं करना चाह रहे।

सत्ता का बार बार यह आरोप भी है कि विपक्ष हर आंदोलन में कूद पड़ता है। सत्ताधारियों को अपने विरोधियों के साथ विपक्ष का खड़े होना अत्यंत श्पीड़ा दायकश् प्रतीत होता है। परन्तु विपक्ष निश्चित रूप से किसानों के साथ खड़ा होकर अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है। जिम्मेदार विपक्ष का यही दायित्व भी है कि वह सत्ता पर नियंत्रण रखे और जनता की आवाज बने। इस तरह का आरोप लगाने वाले 2012-13 में अपनी उस भूमिका को भी याद करें जब वे अन्ना हजारे के जन लोक पाल लाने के आंदोलन में सक्रिय होने के बहाने कांग्रेस को उखाड़ फेंकने की मुहिम में पूरी तरह सक्रिय थे ? आज भी भाजपा के सारे आंदोलन बंगाल,तमिलनाडु,राजस्थान व महाराष्ट्र जैसे राज्यों में ही क्यों होते हैं ? क्या उत्तर प्रदेश व बिहार की कानून व्यवस्था में श्राम राज्य श् के दर्शन होते हैं और बंगाल-महाराष्ट्र अराजकता फैलाने वाले राज्यों में हैं? यदि आज विपक्ष किसानों की आवाज नहीं उठाएगा फिर तो लोकतंत्र का अर्थ व महत्व ही समाप्त हो जाएगा। और सत्ता जन तान्त्रिक नहीं बल्कि तानाशाही के रास्ते पर चल पड़ेगी।

तनवीर जाफरी

इसमें कोई शक नहीं कि इस आंदोलन के गति पकड़ने के साथ साथ दिल्ली व आसपास के आम लोगों की परेशानियां भी बढ़ती जा रही हैं।यथा शीघ्र इसका समाधान निकालना सरकार का दायित्व व कर्तव्य भी है। सरकार को चाहिए कि वह किसानों की वाजिब मांगों को स्वीकार करे। सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि जो नए तीन कृषि अध्यादेशों को वापस लेने की मांग किसान कर रहे हैं उन्हें वापस न लेने के पीछे आखिर सरकार की मजबूरी क्या है ? सरकार को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि देश का किसान केवल अन्नदाता या देश का प्रहरियों को पैदा करने वाला वर्ग ही नहीं बल्कि यह वह वर्ग भी है जो अन्न उत्पादन से लेकर बाजार व्यवस्था तक में देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परन्तु सरकार इसी गलतफहमी में है कि अपने हित-अहित से किसान बेखबर है और सरकार इससे पूरी तरह बाखबर ?

अतिथि देवो भव

अतिथि देवो भव (लेखक- विवेक रंजन श्रीवास्तव

विवेक रंजन श्रीवास्तव, लेखक

मुझे बचपन से मेहमानों की बड़ी प्रतीक्षा रहती थी कारण यह था कि जब मेहमान आते हैं तो कुछ ना कुछ गिफ्ट, फल, मिठाई लेकर आते हैं और मेहमानों के जाते वक्त भी मुझे उनसे कुछ नगद रुपये भी मिलते थे। मिडिल स्कूल में संस्कृत पढ़ने का अवसर मिला। संस्कृत में मेहमानों को अतिथि देवो भव के रूप में वर्णित किया गया है।

सारी टूरिज्म इंडस्ट्री, होटल इंडस्ट्री, और हवाई यात्रा इंडस्ट्री मेहमान नवाजी के आधारभूत सिद्धांत पर टिकी हुई है। बड़े-बड़े विज्ञापन देकर मेहमान बुलाए जाते हैं उनकी खूब खातिरदारी की जाती है, और उनसे भरपूर वसूली की जाती है। मजे की बात है कि इस अपनेपन से मेहमान खुशी खुशी लुट कर भी और खुश होता है। ठीक वैसे ही जैसे साधु संतों के आश्रम में या मंदिर में दान कर के भी भक्त खुश होते हैं।

बड़े राजनीतिक स्तर पर मेहमान नवाजी को डिनर पॉलिटिक्स कहा जाता है। डिनर की भव्य टेबल पर पहुंचने तक रेड कार्पेट से होकर मेहमान को गुजारा जाता है। उसके स्वागत में कसीदे पढ़े जाते हैं। डिनर के साथ संगीत और संस्कृति का प्रदर्शन होता है।मेहमान भले ही दो निवाले ही खाता है किंतु उस भोज की व्यवस्था में बड़े-बड़े अधिकारी जी जान से लगे होते हैं। क्योंकि मेहमान की खुशमिजाजी पर ही उससे मिलने वाली गिफ्ट निर्भर होती है। कई बार तो सीधे तौर पर भले ही कोई लेन-देन ना हो किंतु कितना बड़ा मेहमान किसके साथ बैठकर कितनी आत्मीयता से बातें करता है, यही बात राष्ट्रीय सम्मान की या व्यक्ति के सम्मान की द्योतक बन जाती है। मेहमान के कद से रुतबा बढ़ता है।

बारात खूब मेहमान नवाजी करती है और लौटते हुए दुल्हन साथ ले आती है। गावों में या मोहल्ले में किसके घर किसकी उठक बैठक है, इससे उस व्यक्ति की हैसियत का अंदाजा लगाया जाता है, शादी ब्याह तय करने में, खेत खलिहान की खरीदी बिक्री में यह रूतबा बडा महत्वपूर्ण होता है।शायद इसलिए ही मेहमान को देवता तुल्य कहा गया होगा।

मेहमान भी भांति भांति के होते हैं कुछ लोग बड़े ठसियल किस्म के मेहमान होते हैं जो तू मान ना मान मैं तेरा मेहमान वाले सिद्धांत पर ही निर्वाह करते हैं। मेरे एक मित्र तो अपने परिचय का दायरा ही इसिलिये इतना बड़ा रखते हैं कि जब भी वह किसी दूसरे शहर में जाएं तो उन्हें होटल में रुकने की आवश्यकता ना पड़े। कोई न कोई मित्र उनके मोबाईल में ढूंढ़ कर वे निकाल ही लेते हैं, जो उन्हें स्टेशन से ले लेता है और मजे से दो एक दिनों की मेहमानी करवा कर स्टेशन तक वापस छोड़ भी देता है। तो परिचय का प्रेम व्यवहार का दायरा बढ़ाते रहिये, मेहमान नवाजी कीजिये, करवाइये। अतिथि देवो भव।

चुनाव चंदा कांड–राजनीति के हम्माम में सभी वस्त्रहीन... ?

मध्यप्रदेश में चुनावी चंदाखोरी की आयकर तथा केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड व चुनाव आयोग की सनसनी खेज रिपोर्ट आने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि राजनीति के हम्माम में सभी वस्त्रहीन (नंगे) है, क्योंकि रिपोर्ट में राज्य की पूर्ववर्ती कमलनाथ सरकार को मुख्यमंत्री व मंत्रियों के साथ ही राज्य की मौजूदा भाजपा सरकार के भी तीन मंत्रियों के नाम सामने आए है, आयकर विभाग ने जो छापेमारी कर दस्तावेज जब्त किए थे, उनमें मौजूदा तीन मंत्रियों के नाम है और इसीलिए शिवराज सरकार करीब छः सौ करोड़ की चंदेबाजी का यह पूर्व कांग्रेसी सरकार का मामला सीबीआई या आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरों को सौंप नही पा रही है, शिवराज की सोच है कि चुनाव आयोग, आयकर व केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड की रिपोर्ट की जांच यदि सीबीआई या ईओडब्ल्यू को सौंप दी जाती है तो मंत्रियों को इस्तीफा देना पड़ेगा, जबकि विधि विशेषज्ञों का कहना है कि न्यायालय में दोषी पाए जाने पर मंत्रियों के इस्तीफें की बाध्यता है, इसके पहले नहीं, फिर भी शिवराज जी इस मामले में फूंक-फूंक कर कदम रख रहे है तथा विधि विशेषज्ञों व मुख्य सचिव से पूरी सलाह लेने के बाद वे सरकार की ओर से कोई कदम उठाएगें।

वैसे यह चंदाखोरी का मामला विगत लोकसभा चुनाव (2019) का है, उस समय मध्यप्रदेश में कमलनाथ की सरकार थी, किंतु कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने शिवराज जी के निकटवर्ती एक अधिकारी पर आरोप लगाया कि वर्ष 2014 के सांसद चुनाव के समय शिवराज ने उक्त अधिकारी के माध्यम से चुनावी चंदा इक्ट्ठा कर गुजरात भेजा था, इसलिए उक्त रिपोर्ट में उक्त अधिकारी का नाम भी शामिल किया जाए। किंतु चुनाव आयोग, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड व आयकर की ताजा रिपोर्ट में तीन मौजूदा मंत्री के नाम आने के कारण जांच के दौर में यह मामला थोड़ा उलझ गया है। जबकि दिग्विजय ने खुला आरोप लगाया है कि एक निजी कम्पनी ने शिवराज के उक्त निकटस्थ अधिकारी को आठ करोड़ रूपया दिया था, जो

गुजरात भेजा गया था।

इस चुनावी चंदा काण्ड को इसलिए छोटा व उपेक्षा के लायक नहीं कह सकते क्योंकि इसमें पूर्व कमलनाथ सरकार के तथा मौजूदा सरकार के एक दर्जन से अधिक मंत्री लिप्त पाए गए है तथा करीब 64 रसूखदार अधिकारियों व राजनेताओं ने करीब ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों के पार्टी उम्मीदवारों तक यह पैसा पहुंचाया था।

यहाँ सबसे बड़ा सवाल यह पैदा किया जा रहा है कि आयकर विभाग ने अपनी रिपोर्ट अपनी सरकार को न भेजकर सीधे-सीधे चुनाव आयोग को क्यों भेजी? जबकि यह मामला सीधे केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड से जुड़ा हुआ था, चुनाव आयोग ने मध्यप्रदेश सरकार के साथ प्रत्यक्ष कर बोर्ड को आयकर की रिपोर्ट भेजी तब प्रत्यक्ष कर बोर्ड सामने आ पाय। इस मामले में इसलिए इसे आशंका व राजनीतिक हस्तक्षेप की नजर से देखा जा रहा है, क्योंकि इस काण्ड पर कार्यवाही की पूरी जिम्मेदारी आयकर विभाग की ही थी। उल्लेखनीय है कि दिग्विजय सिंह ने इस मामले में मीडिया को भी घसीटने का प्रयास किया है, इनका कहना है कि शिवराज के मुख्यमंत्रीत्व काल 2012 से 2018 के बीच मीडिया को दिए गए ई-टेंडरिंग घोटाले के दस्तावेज भी जांच एजेंसी को सौंपे जाए व दोषियों को दण्डित करवाने की कार्यवाही की जाए। दिग्विजय का आरोप है कि 2013 के छापों में शिवराज व उनके उक्त निकटतम अधिकारी के नाम भी शामिल है। इसलिए इन दोनों के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज होनी चाहिए।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि चुनाव आयोग ने इस कांड से सम्बंधित जो रिपोर्ट एक विशेष दूत के माध्यम से सरकार को भेजी है, वह करीब छः सौ पृष्ठों की है तथा उसमें कई गंभीर आरोप बड़े राजनेताओं, विधायकों व अफसरों पर लगाए गए है। इसके कारण जहां प्रदेश की राजनीति गर्मा गई है, वहीं राज्य का प्रशासनिक तंत्र बैचेन हो गया है।

ओमप्रकाश मेहता लेखक

यद्यपि अब रिपोर्ट को लेकर राजनीतिक दलों के आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है तथा दोनों मुख्य राजनीतिक दल कांग्रेस व भाजपा हर तरह की जांच को तैयार रहने की बात कर रहे है, वहीं कांग्रेस यह भी केन्द्र की भाजपा सरकार पर आरोप लगा रही है कि केन्द्र सरकार द्वारा जांच एजेंसियों का दुरूपयोग कर पूर्वागृह से ग्रसित होकर कांग्रेस को बदनाम करने की नीयत से यह सब कार्यवाही की जा रही है। साथ ही पूर्व व वर्तमान मंत्रियों ने भी हर तरह की जांच के लिए तैयार होने की बात कही है।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि इस रिपोर्ट ने कई रसूखदारों की नींदे हराम कर दी है। प्रदेश सचिवालय में तो यह रिपोर्ट मुख्य चर्चा का बिन्दू बन गई है, यह भी कहा जा रहा है कि पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ जी को चुनाव आयोग की इस रिपोर्ट का पहले ही पता चल गया था, तभी उन्होंने पिछले दिनों सक्रिय राजनीति से सन्यास लेने की बात कही थी, किंतु अब कयास लगाए जा रहे है कि इस काण्ड के उजागर हो जाने के बाद कांग्रेस ने कमलनाथ जी को विशेष तवज्जोह देना शुरू कर दिया है और संभव है उन्हें पार्टी आलाकमान स्व. अहमद पटेल का रिक्त स्थान सौंप दे व कमलनाथ जी राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हो जाए, इस जांच रिपोर्ट का उन्हें यही ईनाम मिलने वाला है। जो भी हो और इस रिपोर्ट का जो भी हश्र हो, किंतु फिलहाल तो इस रिपोर्ट ने तहलहा मचा रखा है।

परमात्मा ने हमें यह शरीर ईश्वरीय काम के लिए दिया है!

(1) कोरोना महामारी ने सारी दुनियाँ को यह बता दिया है कि हम सभी का दुःख और दर्द एक सा हैः-

वर्तमान में वैश्विक महामारी कोरोना दुनिया भर में पौने सात करोड़ से अधिक लोगों को अपनी चपेट में ले चुकी है। वहीं, साढ़े पन्द्रह लाख से ज्यादा लोग काल का ग्रास बन चुके हैं। अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के विज्ञान एवं इंजीनियरिंग केंद्र (सीएसएसई) की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक विश्व के 192 देशों में कोरोना वायरस से अब तक 6.88 करोड़ लोग संक्रमित हुए हैं, जबकि 15.68 लाख मरीज अपनी जान गंवा चुके हैं। वास्तव में इस बार दुनियाँ का मुकाबला किसी सामने दिखने वाले दुश्मन से नहीं है बल्कि उस अदृश्य वायरस से है, जिसको न तो अभी तक देखा गया है और न ही उसकी ताकत का सही-सही पता ही लगाया जा सका है। इस प्रकार चीन के वुहान शहर से निकलकर पूरी दुनियाँ में फैल चुके वैश्विक कोराना महामारी की तबाही ने सारी दुनियाँ को यह बता दिया है कि हम सभी का दुःख और दर्द एक सा है।

(2) एकता ही कोरोना वायरस को खत्म करने का रामबाण हैः-

कोरोना महामारी न तो किसी देश की सीमाओं को जानती है और न ही किसी धर्म या जाति को पहचानती है। इसलिए इससे लड़ने के लिए विश्व के सभी देशों की एकता जरूरी है। विश्व प्रसिद्ध धर्म गुरू दलाईलामा का कहना है कि आज विश्व कोरोना जैसी महामारी से भी लड़ रहा है, लेकिन इस लड़ाई को लड़ने के लिये विश्व समुदाय की एकता जरूरी है। संयुक्त राष्ट्र संघ महासचिव एंटोनियो गुतेरस ने भी कहा कि ''हमारी दुनियाँ एक शरीर की तरह है। जब तक इस वायरस से एक हिस्सा भी प्रभावित रहता है, हम सभी प्रभावित हैं।'' इसलिए पहले से कहीं अधिक एकजुटता और एकता हमारे प्रमुख सिद्धांत होने चाहिए। वास्तव में एकता ही कोरोना वायरस को खत्म करने का रामबाण है। कोरोना का टीका विकसित करने और उसे ज्यादा से ज्यादा पाने को लेकर दुनिया के धनी देशों के बीच होड़ मची हुई है, जबकि गरीब देश इस दौड़ में पिछड़ गये हैं। ऐसे में विश्व के सभी देशों की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे सभी देशों के नागरिकों के बीच वैक्सीन के एक समान वितरण की कार्य योजना बनायें, ताकि विश्व के प्रत्येक मानव जाति को इसके दुष्प्रभाव से बचाया जा सके।

(3) उदार चरित्र वाले लोगों के लिये सम्पूर्ण धरती एक परिवार हैः-

पिछले कुछ दशकों में इंसान ने विज्ञान की दुनियाँ में तो बहुत तरक्की कर ली किन्तु सामाजिकता और आध्यात्मिकता से दूर होता चला गया। विनाश के सामान तैयार करते-करते वह भूल गया कि स्वयं भी विनाश के कगार पर आ खड़ा हुआ है। वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों ने पूरे विश्व को एक कर दिया है लेकिन यह भूल गया कि अयं निजः परोवेत्ति गणना लघु चेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। अर्थात् यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों की होती है, इसके विपरीत उदार चरित्र वाले लोगों के लिये तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी है।

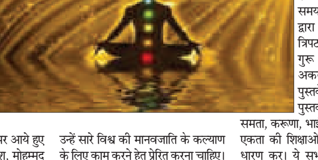

(4) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी सारी मानवजाति में एकता स्थापित करनाः-

परमात्मा ने हमें इस पृथ्वी पर आये हुए सभी अवतारों- कृष्ण, बुद्ध, ईशु, मोहम्मद साहब, गुरू नानक की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करते हुए इस युग के अवतार बहाउल्लाह की हृदयों की एकता की शिक्षा के माध्यम से विश्व के सभी परिवारों, राष्ट्रों, धर्मों एवं जातियों में एकता स्थापित करने के लिए भेजा है। इसलिए इस युग में दी जाने वाली शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी सारी मानवजाति में एकता स्थापित करने वाले विश्व नागरिकों का निर्माण करना होना चाहिए। इसके लिए हमें दुनियाँ भर के बच्चों को स्कूल के माध्यम से बचपन से ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ भौतिक ज्ञान देने के साथ ही साथ मानवीय और आध्यात्मिक ज्ञान देकर उन्हें सारे विश्व की मानवजाति के कल्याण के लिए काम करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। उन्हें वसुधैव कुटुम्बकम्', जय जगत, विश्व एकता एवं विश्व शांति की गुणात्मक शिक्षा देकर उनका विश्वव्यापी, वैज्ञानिक तथा मानवीय दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।

(5) परमात्मा ने हमें यह शरीर ईश्वरीय काम के लिए दिया हैः-

प्रभु कहता है कि तुमने अपने शरीर रूपी यंत्र का अगर गलत उपयोग किया तो तू नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा और अगर तुमने मेरी आज्ञाओं को माना तो तुम्हारा जीवन सुख, समृद्धि और प्रसन्नता से भर उठेगा। परमात्मा कहते हैं कि तेरा हृदय मेरे गुणों का खजाना है। तेरे स्वार्थ रूपी गंदे हाथ कही मेरा खजाना लूट न लें। मैंने तुझे प्रेम के प्रतीक स्वरूप तुमको हाथ दिये। इन हाथों को मैंने इसलिए तुझे दिया कि तेरे इन हाथों में मेरे द्वारा समय-समय में विभिन्न अवतारों के द्वारा भेजे गये गीता, त्रिपटक, बाईबिल, कुरान, गुरू गंथ साहिब, किताबे अकदस आदि पवित्र पुस्तकें हों। और तू इन पवित्र पुस्तकों में दी गई मेरी न्याय, समता, करूणा, भाईचारा, त्याग और हृदय एकता की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण कर। ये सभी पवित्र पुस्तकें मेरी कृपालुता की प्रतीक हैं।

(6) प्रार्थना की शक्ति में विश्वास रखेंः-

मैं विगत 4 अगस्त 2020 को कोरोना पॉजिटिव हो गया था। इस बीमारी के इलाज के लिए मैं 31 दिनों तक संजय पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एसजीपीजीआई), लखनऊ में भर्ती रहा। इस दौरान मैंने अपने वार्ड के कम से कम 10 लोगों को कोरोना वायरस से जंग हारते हुए देखा। इन संक्रमित अधिकांश लोगों से मेरी दोस्ती थी। इस घटना ने मुझे झकझोर कर रख दिया कि एक व्यक्ति जिसके साथ मैं कल हँस-बोल रहा था, आज वह नहीं था। 4 अगस्त को कोरोना वायरस से संक्रमण की रिपोर्ट आने के बाद मुझे एसजीपीजीआई ले जाने के लिए एम्बुलेंस आ गयी। उसी समय से मैंने अपना सारा ध्यान अपने भगवान 'बहाउल्लाह' की प्रार्थना पर केन्द्रित कर दिया, जिनकी 'धर्म एक है, ईश्वर एक है तथा मानव जाति एक है' की शिक्षाओं को मैंने अपने जीवन में आत्मसात् कर रखा है। मैंने उनसे इस वायरस से लड़ने के लिए शक्ति और उनका आशीर्वाद मांगा। मुझे विश्वास था कि वे मेरी सहायता जरूर करेंगे और उनके आशीर्वाद से मैंने कोरोना वायरस के संक्रमण को हरा दिया। मैं सभी लोगों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है। दुनियाँ में प्रार्थना से बड़ी कोई भी शक्ति नहीं है।

(7) अपने काम से नहीं प्रभु के काम से जियोः-

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य का जन्म एक महान उद्देश्य के लिए हुआ है। हमारे प्रत्येक कार्य रोजाना प्रभु की सुन्दर प्रार्थना बने। आज सारे संसार में मनुष्य की अज्ञानता के कारण सारे संसार में अनेकता एवं विद्वेष फैला हुआ है। हमारी आत्मा का पिता परमात्मा अपनी सभी मानव संतानों के बीच एकता, प्रेम एवं सौहार्द चाहता है। यहाँ तक कि हमारे शरीर का पिता भी अपनी सभी संतानों के बीच प्रेम एवं एकता चाहता है। इसलिए मर्यादा, न्याय, समता, करूणा, भाईचारा, त्याग, हृदय की एकता आदि ईश्वरीय गुणों को धारण करते हुए हमें सारे संसार में एकता स्थापित करना है। विश्व एकता की शिक्षा इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। विश्व एकता की शिक्षा में आज के युग की सभी समस्याओं का समाधान निहित है। आइये, हम प्रथम चरण में वैश्विक लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करने के ईश्वरीय सूत्रधार बने ताकि द्वितीय चरण में संसार में आध्यात्मिक सभ्यता स्थापित करने का मानव जाति का अंतिम लक्ष्य पूरा होने का मार्ग प्रशस्त हो।

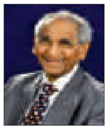

लेखक- डॉ जगदीश गाँधी

- वसुधैव कुटुम्बकम् - जय जगत

न्यूज ब्रीफ

उपला हाईस्कूल पहुंचकर कलेक्टर बने गणित के शिक्षक, विद्यार्थियो को पढ़ाया दो घण्टे

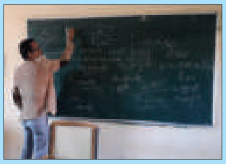

माही की गूंज, बड़वानी।

कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा ने कल हाईस्कूल उपला का निरीक्षण किया। इस दौरान विद्यार्थियो द्वारा संस्था में गणित के शिक्षक का अभाव होने की बात बताने पर कलेक्टर ने मौके पर ही उपस्थित सहायक आयुक्त आदिवासी विकास को इस समस्या का निवारण प्राथमिकता से कराने का निर्देश दिए। तत्पश्चात कलेक्टर ने स्वयं गणित के शिक्षक बनकर विद्यार्थियो को सरल प्रक्रिया से गणित के सवाल हल करना एवं उन्हें किस प्रकार याद रखना इसके बारे में विस्तार से बताया।

गणित से एमएससी किए हुए कलेक्टर श्री वर्मा ने विद्यार्थियो को बिन्दु से रेखा, रेखा से क्षेत्रफ्ल, आयतन, घनमीटर के बारे में विस्तार से बताया। इस दौरान कलेक्टर ने विद्यार्थियो को इतिहास में घटित रामायण, महाभारत के पात्रो के बारे में भी बताकर विद्यार्थियो से आव्हान किया उनकी लाइफ के अगामी 5 से 6 वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः विद्यार्थी प्रत्येक विषय को रटने के स्थान पर समझकर पढ़े।

प्रशाासन ने मुक्त कराई बहुमुल्य सरकारी जमीन

माही की गूंज, बड़वानी।

बड़वानी एसडीएम घनश्याम धनगर ने आशाग्राम रोड़ पर हुए 2 अतिक्रमणों को हटवाकर लगभग दो एकड़ जमीन मुक्त कराई है। मुक्त करवाई गई जमीन का बाजार मूल्य लगभग 7 करोड़ रूपए आंका गया है।

आशाग्राम रोड़ पर मल्टीप्लेक्स के आगे दीपक शुक्ला द्वारा शासकीय भूमि पर बनाए गए बीज ग्रेडिंग यूनिट को हटाने के मिले नोटिस पर अतिक्रमणकर्ता ने अपना अतिक्रमण स्वेच्छा से हटाना प्रारंभ कर दिया है। वहीं अपने संसाधनों से इसे तोड़ने की भी कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई है। इस पर एसडीएम ने उन्हें अपना अतिक्रमण अगले दिन तक हटाने हेतु मोहल्लत देते हुए उनकी बाउण्ड्रीवाल को जेसीबी से तोड़कर उनके हद की सीमा का भी निर्धारण किया।

इस दौरान एसडीएम घनश्याम धनगर, नगरपालिका सीएमओ कुशलसिंह डोडवे, तहसीलदार राजेश पाटीदार ने स्वयं खड़े होकर अवैध कालोनी के माध्यम से किए गए शासकीय भूमि पर बनाई गई दिवाल एवं क्रांक्रिट रोड़ को तोड़ा गया।

अटकान को अटकाया जोशी को बचाया, फर्जी भुगतान मामले ने अटकान पर होगी कार्रवाई

फर्जी वेतन भुगतान किया बीईओ और लेखापाल जोशी ने आरोप पत्र दिया बाबू अटकान सहायक ग्रेट-2 को

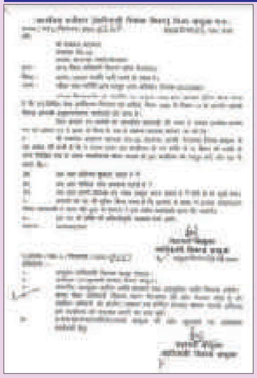

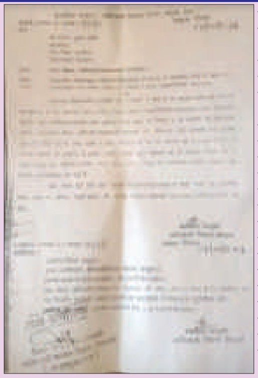

सहायक आयुक्त झाबुआ द्वारा रामचंद्र अटकान को जारी आरोप-पत्र। तत्कालीन बीईओ सुमनकांत वाष्णेय के साथ फर्जी मजदूरी भुगतान मामले में लेखापाल जोशी को जारी नोटिस

माही की गूंज, पेटलावद (झाबुआ), राकेश गेहलोत

फर्जी वेतन भुगतान मामले में शिकायतकर्ता रमेश धानूक द्वारा की गई शिकायत ओर गूंज द्वारा मय प्रमाण प्रकाशित किए समाचारों के बाद आदिवासी विकास विभाग में भारी हलचल मच गई है, जिसके बाद अधिकारी अब गली निकालने में जुटे हुए है।

फर्जी वेतन भुगतान मामले में मुख्य जिम्मेदार को बचाकर वेतन भुगतान में जिसका कोई हस्तक्षेप नही उस पर आरोप-पत्र थमा दिया गया। शिकायतकर्ता रमेश धानूक द्वारा सूचना अधिकार में ली गई जानकारी में खुलासा हुआ था कि, खण्ड शिक्षा कायार्लय पेटलावद में पदस्थ लेखापाल उपेन्द्र जोशी ने एक महिला कर्मचारी का 12 माह का वेतन निकाल दिया और उपस्थित पत्रक 2017 का लगा दिया था। लेखापाल के द्वारा फर्जी भुगतान फरवरी 2018 में अपने हाथ से बिल बनाकर भुगतान किया था, भुगतान के मामले में वरिष्ठ अधिकारियों से अनुमति नही ली गई। अब लगातार खबरों के बाद इस मामले में जांच अधिकारी ने आरोप पत्र जारी किया है जो कि रामचन्द्र अटकान सहायक ग्रेट-2 जो पूर्णतः गलत है और समझ से परे है, क्योंकि फर्जी वेतन भुगतान किया लेखापाल ने और आरोप-पत्र अटकान को दिया गया। कार्यालय कलेक्टर (आदिवासी विकास विभाग) झाबुआ द्वारा 24 नवम्बर को पत्र क्रमांक/स्था.3/शिकायत/2020/6262 से आरोप-पत्र जारी किया गया।

पद नाम नही होने के बाद भी कलेक्टर दर पर किया गया मजदूरी भुगतान

लेखापाल उपेन्द्र जोशी द्वारा मजदूरी वेतन का भुगतान भी किया जिसका कोई पद नाम नही होने के बाद भी कलेक्टर दर पर भुगतान कर दिया। जबकि कर्मचारी की नियुक्ति आदेश में पद नाम कही से कही तक नही है इसी मामले (फर्जी मजदूरी भुगतान) में तत्कालीन बीईओ सुमनकांत वार्ष्णेय के खिलाफ 20 लाख की वसूली के आदेश हो चुके है, जबकि इस मामले में भी बीईओ वाष्णेय के साथ लेखापाल जोशी को भी नोटिस देकर जांच के दायरे में लिया गया था। फर्जी वेतन भुगतान मामले में वसुली के साथ जोशी पर भी निलंबित की कार्रवाई होनी थी, लेकिन एक ही जैसे दो मामलो में विभाग के अधिकारियों द्वारा किसी दबाव में जोशी को बचाया जा रहा है। एक और जोशी के किए भुगतान के लिए तत्कालीन बीईओ और लेखापाल को छोड़ अटकान को अटका दिया तो दूसरे मामले में बीईओ वाष्णेय पर पूरा-पूरा बिल फाड़ कर जोशी को बचा लिया गया।

विभाग ने निकाली फर्जी नियुक्ति मामले को दबाने की गली, कार्रवाई के नाम पर नाटक ओर वसुली जारी

जिस प्रकार आदिवासी विकास विभाग में बाबू के परिवार की एक के बाद एक फर्जी नियुक्ति का मामला उजागर हुआ है, अधिकारी अपने आप को और अपने अधिनस्तो को बचाने की गली निकाल रहे। जिस मामलों में अटकान दोषी नही उस मामले में आरोप तय कर मामले को अटका दिया। आरोप-पत्र जारी होने के तीन माह बाद भी मामले में कोई कार्यवाही नही हुई है।

सूत्रों से मिल रही जानकारी के अनुसार आरोप पत्र में मध्यप्रदेश सिविल सेवा (वर्गीकरण नियंत्रण एवं अपील) नियम-1966 के नियम 14 के अंतर्गत अनुशात्मक कार्रवाई होना है, जिसके तहत निलंबन की कार्रवाई होना तय है और निलंबन की कार्रवाई भी की जा चुकी है, लेकिन अब तक इसे आफ द रिकॉर्ड उजागर नही किया है। मामले के शांत होने के बाद पूरे मामले को लेंन-देंन करके दबा दिया जाना भी तय है यह सभी जान रहे है। आरोप-पत्र के अनुसार मामले में गवाह योगेंद्र प्रसाद, पूर्व प्राचार्य, शकुंतला पाठक, तत्कालीन प्रधान पाठक और उपेन्द्र जोशी, लेखापाल खण्ड शिक्षा कार्यालय को बनाया गया है, जो सब फर्जी भुगतान के मामले में कही न कही जुड़े हुए है।

बीट प्रभारी कौशलेंद्र कुमार के आने के बाद से जुआरियो, सटोरियो व शराब के अवैध कारोबार की हो गई दिन दुगनी रात चोगुनी

माही की गूंज, सिहोर।

एक तरफ जहा सिहोर एसपी शहर मे सटोरियो जुआरियो व अवेध शराब बेचने वालो पर अभियान चला रखा है, वही दुसरी तरफ बीट प्रभारी कौशलेंद्र कुमार एसपी की छ्वी को धुमील करने मे लगा हुआ है, सुत्रो की माने तो कौशलेंद्र कुमार की बीट मे अवैध शराब का कारोबार धड्डले से चलवा रहा है। अवैध तरीके से कारोबार करने वाले लोगो पर कार्रवाई करने की अपेक्षा साहब तो आखे मुंद कर बेठे हुए है, जिससे आम जनमानस को भारी दिक्कतो का सामना करना पड रहा है, लेकिन कोतवाली मे पदस्त बीट प्रभारी कौशलेंद्र कुमार के सिर पर जु तक नही रेंग रही है, अपनी बीट मे सटोरियो, जुआरियो को अव्वल दर्जे की छुट कौशलेंद्र कुमार ने दे रखी है। फरीयादी को अपराधी व अपराधी को फरियादी बनाने मे जैसे साहब ने डिग्री ले रखी है, इनकी बीट के अपराधी सरेआम सीहोर में खुले घूम रहे है तो फरीयादी को अपराधी बनाने में साहब कोई चुक नही कर रहे है, कार्रवाई के नाम पर इनके द्वारा सिहौर एसपी को भी गुमराह किया जा रहा है। फरियादी जब इनके पास न्याय कि गुहार लगाने आता है तो एफआईआर लिखने की बजाय साहब गरिब लोगो पर वर्दी का रोब झाडने लग जाते है इसके बाद फरियादी को भगा दिया जाता है व इनके द्वारा सेंटिग कर ली जाती है, मानो जब तक साहब की जैब मे पेसे नही आए इनका मन किसी काम में नही लगता है। नए थाना प्रभारी पदस्थ हुए है वे किस तरह से माफियाओ एवं अपराधियो पर अंकुश लगा पाते है यह देखने का विषय है।

नवल के जन्म के एक माह के बाद से दादा के हाथों में है परवरिश

माही की गूंज, खरगोन।

शहर में स्थित दामखेड़ा कॉलोनी के अजजा परिवार में 31 दिसंबर 2019 को बेटे का जन्म हुआ। जन्म देने के एक माह बाद ही मां सुरली चल बसी और पिता दीतासिंह की ऐसी हालात भी नहीं कि, अपने एक माह के पुत्र को गोद में लेकर लाड़ कर सके। पिता दीतासिंह दोनों पैरों से लाचार है, चलना तो दूर अपने दैनिक कार्य भी करना उनके लिए आसान नहीं। कुदरत की ऐसी अनहोनी परिस्थिति के बीच 70 वर्षीय बुजुर्ग दादा तीखिया के हाथों में नवल की परवरिश का जिम्मा आया। तीखिया मजदूरी और बकरी पालन कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे है। तीखिया अपनी इस जिम्मेदारी को अनुभव के बगैर निभाते रहे। जन्म से ही नवल वजन इतना अच्छा नहीं था इसलिए वजन निरंतर गिरता गया। इधर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रीना पाटीदार नवल के गिरते वजन को लेकर चिंता के साथ रोजाना दादा को एनआरसी में भर्ती करने के लिए समझाती रहीं। छोटे से बच्चे को इस बीच दस्त और स्कीन एलर्जी की शिकायत भी हो गई। आखिरकार आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने दादा को डरा धमकाकर बेटे को 10 सितंबर को जिला अस्पताल स्थित एनआरसी केंद्र में भर्ती कराया।

रेडी-टू-इट पोषण आहार से स्थिति में हुआ सुधार

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रीना पाटीदार बताती है कि, 6 माह के बाद से नवल को स्कीन एलर्जी के कारण पीठ पर फुंसिया उभरने लगी, फुंसिया देखकर दादा नवल को पूरी तरह कपड़े ढ़ककर रखते रहे, उनके इस अंजान कदम से नवल को ओर अधिक एलर्जी होने लगी। पूरी तरह पीठ कर फुंसिया पक जाने के कारण नल बिल्कुल भी नहीं सो पाता था। इन सारी समस्याओं से आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को झखझोर दिया। 10 सितंबर को एनआरसी केंद्र में भर्ती कराने के बाद 5 दिनों तक पोषण और स्कीन का निरंतर उपचार चलता रहा। कार्यकर्ता ने दादा को बच्चे पालने का हुनर भी सिखाती रही और आज पीठ से फुंसिया भी ठीक हुई तथा नवल के वजन में भी बढ़ोत्तरी हो गई। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने दादा को रेडी-टू-इट रोजाना देने के लिए हमेशा प्रेरित कर रही है। लिहाजा वजन में भी सुधार होने लगा है। बहरहाल एनआरसी केंद्र और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व सहायिक शहनाज खान की सुझ-बुझ काम आई। आज नवल का वजन 5 किलों से अधिक है और अब वो स्वस्थ होकर चौन की नींद ले पा रहा है।

पीने के पानी के लिए कुप पर निर्भर ग्रामीण, एक माह बाद पानी सुखने से ग्रामीणो को दर-दर पड़ेगा भटकना

गुजरात सरकार ग्रामीणो को मुल सुविधाए करवाती है उपलब्ध तो म.प्र. सरकार क्यो नही - विधायक पटेल

माही की गूंज, आलीराजपुर। संजय गेहलोत

साहब, हमारे फलिए में 55 घर के लोग कुछ कुओं पर निर्भर है, इन कुओं में भी एक महीने बाद पानी खत्म हो जाएगा, हमें 12 महीने पानी और बिजली मिल जाए ऐसी व्यवस्था करवा दो। गांव में बिजली की सुविधा भी नहीं है और सड़क भी नहीं है ऐसे में हमें दैनिक कार्यो के लिए बहुत संघर्ष करना पडता है। यह बात ग्राम केल्दीमाल के बडी माल फलिए और वाकवी फलिए के ग्रामीणों ने विधायक मुकेश पटेल से कही। जिस पर विधायक पटेल ने कहा कि, जिला प्रशासन और सरकार मथवाड के इस सुदुर पहाडी क्षेत्र के ग्रामीणों के साथ भेदभाव वाला रवैया अपना रहे है, इस क्षेत्र को विकास की मुख्यधारा से अलग-थलग कर दिया गया है। जिला प्रशासन के किसी भी विभाग के जिम्मेदार अधिकारी इस गांव के ग्रामीणों की सुध तक नहीं ले रहे है। यदि एक महीने के भीतर प्रशासन ने केल्दी की माल के सभी फलियों में ग्रामीणों की बुनियादी सुविधाओं के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं नहीं की तो मै ग्रामीणों के साथ कलेक्टोरेट का घेराव कर धरने पर बैठुंगा।

कुप की पाल पर बैठकर कर सुनी समस्याएं

इस दौरान ग्राम के लोकेश, दारसिंह देवला, रामसिंह, रेवजी, रायसिंह, आपसिंह और अन्य ग्रामीणों ने विधायक पटेल को गांव के मुख्य कुंप का निरीक्षण करवाया और स्थिति बताई। ग्रामीणों ने बताया कि, बडी माल फलिए में सिर्फ ये एक मुख्य कुआ है जिससे 55 घरों के रहवासी पानी का उपयोग करते है। इस कुप सहित कुछ अन्य कुओ में सिर्फ एक महीने का पानी ही शेष बचा है। गर्मी के मौसम में हमें पानी के लिए बहुत संघर्ष करना पडता है और काफी दुर से जैसे-तैसे पानी लाते है। ग्रामीणों ने बताया कि, इन फलियों में बिजली और सडक की सुविधा भी नहीं है, जिसके कारण हमें दैनिक कार्यो के लिए बहुत ज्यादा परेशानियों का सामना करना पडता है। यदि गांव में कोई गंभीर मरीज हो या गर्भवती महिला हो तो आपात स्थिति में जैसे-तैसे अस्पताल तक ले जा पाते है।

जिला मुख्यालय से 62 किमी दूरी, लेकिन विकास के नाम पर कुछ भी सुविधा नहीं

गौरतलब है कि ग्राम केल्दी की माल की दूरी जिला मुख्यालय से करीब 62 किमी है। लेकिन यहां विकास के नाम पर किसी भी प्रकार की बुनियादी सुविधा ग्रामीणों को नहीं मिल पा रही है। यहां कभी किसी बडे अधिकारी या जनप्रतिनिधि ने पहुंचकर ग्रामीणों की सुध तक नहीं ली। कुछ माह पूर्व विधायक पटेल इस ग्राम के वाकवी फलिए में पहुंचे थे और ग्रामीणों से मिलकर समस्याएं सुनी थी। सोमवार को एक बार फिर विधायक पटेल यहां पहुंचे और ग्रामीणों से मिलकर चर्चा कर समस्याओं का समाधान करवाने का आश्वासन दिया। उन्होने कहा कि, यदि शासन और प्रशासन ने इस गांव के सभी फलियों में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं करवाई तो चरणबद्ध आंदोलन किया जाएगा।

समीप ही गुजरात का हापेश्वर, जहां हर सुविधा मौजूद

उल्लेखनीय है कि केल्दी की माल के बडी माल और वाकवी फलिया गुजरात सीमा से सटा हुआ है। इनके समीप गुजरात का हापेश्वर क्षेत्र आता है, जहां सुव्यवस्थित बिजली के खंभे, डीपी लगी हुई है और उस क्षेत्र के गांवों में सडक और पानी की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध है। विधायक पटेल ने कहा कि, गुजरात सरकार अपने क्षेत्र में ग्रामीणों को हर बुनियादी सुविधा दे सकती है तो मप्र सरकार और जिला प्रशासन को अपने क्षेत्र के ग्रामीणों के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवाने में क्या परेशानी है।

चिकित्सा शिविर को यादगार बताते हुए सिंधी समाज ने अभिनन्दन किया

माही की गूंज, खण्डवा।

श्री पूज्य सिंधी पंचायत द्वारा सिंधी कॉलोनी स्थित सिंधी धर्मशाला में चल रहे एक्यूप्रेशर प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का समापन हुआ। समाजजन ने इस शिविर को अविस्मरणीय और कारगर बताते हुए सेवा में लगे चिकित्सकों और पूरी टीम को अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित किया। श्री पूज्य सिंधी पंचायत के सह सचिव घनश्याम वाधवा और प्रवक्ता कमल नागपाल ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया कि, शिविर 15 दिसंबर से 22 दिसंबर तक लगाया गया था और लगभग 300 लोगों ने इसका लाभ लिया। शिविर में नसों और शरीर के दर्द से संबंधित मरीज अधिक संख्या में आए। स्थानीय सिंधी कॉलोनी, टैगोर कॉलोनी सहित विभिन्न क्षेत्रों के रहवासियों ने इसका लाभ लिया।

पंचायत सचिव श्याम हेमवानी ने परिवार सहित शिविर में लिए स्वास्थ्य लाभ के अनुभव को बताते हुए कहा कि, मुझे व भाभी को लंबे समय से चली आ रही स्वास्थ्य समस्या में निरंतर अभ्यास से लाभ हुआ है प्राकतिक चिकित्सा पद्धति से मिला लाभ अविश्वसनीय है। समापन समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिंधी सेवा मंडली के अध्यक्ष मेठाराम पिंजानी ने इस शिविर को अविस्मरणीय और सराहनीय बताया और चिकित्सकों की टीम की मुक्त कंठ से सराहना की। श्री पिंजानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि, हमें प्रसन्नता है कि सिंधी सेवा मंडली इस शिविर के आयोजन में सहभागी बनी। पंचायत के उपाध्यक्ष मोहन दीवान ने शिविर की सफलता पर बधाई दी और हर्ष व्यक्त किया।

म.प्र. राजपत्रित अधिकारी संघ खण्डवा ईकाई के अध्यक्ष डॉ. प्रतापराव कदम ने भी अपनी पत्नी के साथ स्वास्थ्य को लेकर जागरूक होकर चिकित्सा लाभ लिया। डॉ.अनूप चौधरी व टीम एवं आयोजक श्री पूज्य सिंधी पंचायत का आभार व्यक्त करते हुए अभिनंदन पत्र प्रदान किया गया।

पदम् नगर में शिविर का शुभारम्भ गुरुवार से

यह चिकित्सा शिविर 24 दिसंबर गुरुवार से 31 दिसम्बर तक श्री झूलेलाल मंदिर पदम नगर में भी आयोजित किया जा रहा है, इसका समय सुबह 9 बजे से साढ़े 12 बजे और दोपहर 3 बजे से शाम 6 साढ़े बजे रहेगा।

आत्मरक्षा प्रशिक्षण के नाम पर बालिकाओं से अवैध वसूली करने का तोमर पर लगा आरोप

माही की गूंज, झाबुआ।

राजेन्द्रसिंह तोमर जो शासकीय उच्चतर मावि कन्या शिक्षा परिषद छिन्दवाडा पर कार्यरत है तथा उन्हे बालिका आत्मरक्षा प्रशिक्षण का नोडल अधिकारी का कार्यभार भी सौपा गया है लेकिन राजेन्द्रसिंह तोमर शासन से मान्यता प्राप्त मध्यप्रदेश कराटे एसोसिएशन के तकनीकी डायरेक्टर होने के नाम पर शासन को भ्रमित कर रहे हैं एवं उन पर बेल्ट परीक्षा के नाम पर आदिवासी बालिकाओं से अवैध वसूली करने के आरोप लगे रहे हैं। मामले की शिकायत कलेक्टर सहित बड़े अधिकारियों को की गई है।

शिकायतकर्ता बलवन्तसिंह देवड़ा ने बताया कि, कराटे के अलावा भी ऐसी कई कलाएं हैं जिन्हें बालिका प्रशिक्षण मे लेकर अपनी आत्मरक्षा करना सीख सकती हैं जैसे जूडो, ताईक्वांडो, बॉक्सिंग, मिक्स मार्शल आर्ट, मुईथाई आदि। बालिका आत्मरक्षा प्रशिक्षण में मध्यप्रदेश शासन से गैर मान्यता प्राप्त मध्यप्रदेश कराटे एसोसिएशन से जुड़े लोगों को ही प्रशिक्षण देने हेतु सम्मिलित किया जा रहा है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान बालिका आत्मरक्षा प्रशिक्षण के साथ पिछले 3-4 वर्षो से शासन से गैर मान्यता प्राप्त मध्यप्रदेश कराटे एसोसिएशन के लेटर पेड पर राजेन्द्रसिंह तोमर की अनुमति से बेल्ट परीक्षा की फीस का विवरण भी भेजा जा रहा है, जो कि 100 रुपए से लेकर 500 रुपए तक है। बलवन्तसिंह देवड़ा बताते है कि, आदिवासी क्षेत्र व मध्यप्रदेश के अन्य क्षेत्रो की बालिकाओं की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय होती है कि, वे स्कूली शिक्षा भी पूरी नहीं कर पाती हैं फिर यह बेल्ट परीक्षा की फीस कैसे भर सकती हैं। शासन ने बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए यह प्रशिक्षण लागू करवाया है जबकि बेल्ट परीक्षा के नाम पर राजेन्द्रसिंह तोमर अवैध वसूली कर रहा है। तोमर ने बेल्ट परीक्षा विवरण के जिस पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर भेजा है उस लेटर पेड पर मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त संस्था दर्शाया गया है जबकि मध्यप्रदेश कराटे एसोसिएशन मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त ही नही है और अधिकृत कराटे चेम्पियनशिप में उनकी उपलब्धियां देखी जाए तो भी शून्य ही हैं। वहीं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कराटे की राष्ट्रीय संस्था कराटे एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा मध्यप्रदेश कराटे एसोसिएशन को निलम्बित कर दिया गया है।

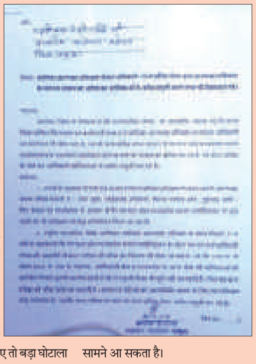

क्या शुल्क के नाम पर हुआ बड़ा घोटाला

शिकायत में दिए गए तथ्यों को देखा जाए तो मामले में शुल्क वसूली के नाम पर बड़ा घोटाला होने की संभावना है ओर इसमें राजेन्द्रसिंह तोमर की जिम्मेदारो से मिली भगत हो सकती है। बेल्ट परीक्षा के नाम पर मासूम बच्चियों से अवैध वसूली एवं मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त होने के नाम पर शासन को गुमराह कर रहे हैं जिसकी जांच की जाए तो बड़ा घोटाला सामने आ सकता है।

पूर्व ब्लॉक उपाध्यक्ष के भाजपा का दामन थामने के बाद डामर को ब्लॉक कांग्रेस उपाध्यक्ष किया नियुक्त

माही की गूंज, सारंगी।

नंदराम डामर की कांग्रेस पार्टी में सक्रियता को देखते हुए, पूर्व केंद्रीय मंत्री झाबुआ विधायक कांतिलाल भूरिया, पेटलावद विधायक वालसिंह मैडा, कांग्रेस जिलाध्यक्ष निर्मल मेहता के निर्देशानुसार जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष हनुमंत सिंह डाबड़ी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह राठौर, ब्लॉक अध्यक्ष अग्निनारायण सिंह की अनुसंशा पर नंदराम डामर निवासी पोलारुंडा को ब्लॉक कांग्रेस कमेटी सारंगी के ब्लॉक उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

ब्लॉक कांग्रेस सारंगी उपाध्यक्ष नियुक्त होने पर नंदराम डामोर ने कहा, पार्टी ने जो मुझे जिम्मेदारी दी है व मुझे इस काबिल समझा मैं इस पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करूंगा, हमेशा पार्टी के हित में काम करूंगा। नंदराम डामर के ब्लॉक कांग्रेस सारंगी उपाध्यक्ष बनने पर जनपद पेटलावद पूर्व अध्यक्ष हीरालाल डाबी, पूर्व जनपद पेटलावद उपाध्यक्ष योगेंद्र सिंह राठौर, सारंगी ब्लॉक अध्यक्ष कांग्रेस नगर अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह राठौर, आईटी सेल प्रदेश सचिव जयराज भट्ट राठौर, सुरेंद्र सिंह सोलंकी, भेरूसिंह चौहान, सुरेश गामड, राजू गामड, अर्जुन पाटीदार आदि क्षेत्र के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बधाई दी।

ब्लॉक उपाध्यक्ष बीरज पोरवाल भाजपा में हो चुके है शामिल

सारंगी क्षेत्र कांग्रेस का गढ़ माना जाता है जिसमे भाजपा ने सेंधमारी करते हुए कांग्रेस के सारंगी ब्लॉक उपाध्यक्ष बीरज पोरवाल को भाजपा में शामिल कर कांग्रेस को बड़ा झटखा दिया था, जिससे उभरने के लिए अपनी टीम को वापस मजबूत करने के लिए सारंगी ब्लॉक उपाध्यक्ष नंदराम डामर को बनाकर भाजपा के दिए झटखे से उभरने का प्रयास किया है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बीरज पोरवाल के बाद सारंगी-मठमठ क्षेत्र के कई कांग्रेस कार्यकर्ता भाजपा में जा सकते है और इसी सेंधमारी से बचने के लिए कांग्रेस के नेता सारंगी में सक्रिय हो गए है।

हिंदू जागरण मंच के उच्च पदाधिकारियों ने किया कार्यकारणी का गठन

माही की गूंज, झकनावदा।

पेटलावद के गायत्री माता मंदिर पर हिंदू जागरण मंच के तत्वाधान में एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें हिंदू जागरण मंच के उच्च पदाधिकारियों द्वारा झकनावदा कार्यकारणी का गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष का वीरेन्द्र गोस्वामी, उपाध्यक्ष का उत्तम गहलोत, नगर अध्यक्ष का डॉक्टर रमेश कुमार सोलंकी, नगर उपाध्यक्ष का विनायक वैरागी, नगर महामंत्री का जमुनालाल चौधरी एवं नगर मंत्री का रितेश प्रजापत को दायित्व सौंपा गया।

हिंदू जागरण मंच के जो आयाम बने हुए हैं उनके अनुरूप ही इस नवनियुक्त कार्यकारणी को कार्य करना था, बैठक में अयोध्या में बनने जा रहे हैं भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण को लेकर चर्चा की गई एवं सभी लोगों के सहयोग की अपील की गई, इसके लिए सभी हिंदू संगठन के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से सहयोग की अपील की है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र समिति के आह्वान पर हिंदू जागरण मंच, बजरंग दल, शिवसेना एवं विश्व हिंदू परिषद, जैसे अनेक हिंदू संगठनों से सहयोग की अपील की है। इस अवसर पर प्रांत उपाध्यक्ष भैरूसिंह टाक, विभाग सह संयोजक मनोज पडियार, बेटी बचाओ प्रमुख अनिल पाटीदार, जिलाध्यक्ष कालूसिंह निनामा, जिला उपाध्यक्ष प्रकाश प्रजापत, जिला महामंत्री कमलेश वर्मा, जिला मंत्री राजेश सोलंकी आदि उपस्थित थे।

आत्महत्या को बता रहा था हत्या का प्रयास

खुलासा: फर्जी निकला गोलीकांड में हत्या के प्रयास का मामला

माही की गूंज, रतलाम।

बिलपांक थाना क्षेत्र अंतर्गत हाईवे पर हुए गोलीकांड का रतलाम पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस के अनुसार घायल युवक ने स्वयं ही गोली मारकर आत्महत्या का प्रयास किया था।

एसपी गौरव तिवारी ने बताया कि, 3 अक्टूबर को फरियादी शेल्डन एन्थोनी (30) निवासी शक्तिनगर रतलाम ने रिपोर्ट किया था कि, वह रतलाम से बाईक पर बडनगर फायनेंस कार्यालय हाईवे रोड से जा रहा था। बिलपांक फंटे के आगे एक बाइक पर दो व्यक्ति पीछे से आए और एक ट्रक को ओवर टेक करने में बाइक से हल्के से टकरा गए। इस पर दोनों के मध्य बोलाचाली हो गई और मोटर सायकल पर पीछे बेठे व्यक्ति ने जेब से कट्टा निकाला और जान से मारने की नियत से शेल्डन पर फायर कर दिया, जिससे उसे सामने पेट मे गोली लगी। दोनो आरोपी वहा से बदनावर तरफ भाग गए।

रिपोर्ट पर थाना बिलपांक ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ धारा 307,34 का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया। विवेचना के दौरान सायबर सेल रतलाम की मदद से फरियादी की लोकेशन प्राप्त कर जानकारी ली गई। पुलिस जांच और मेडिकल रिपोर्ट में जो बात सामने आई उसने पुलिस को भी चौंका दिया। जिसके बाद पुलिस ने जब फरियादी से फिर से कथन लिए तो उसने पूरी घटना बताई। बाद मे फरियादी शेल्डन को तलब कर पूरक कथन लिए गए तथा फरियादी शेल्डन व साक्षी चिरंजीव जादव के धारा 164 जा.फौ. के न्यायालय रतलाम में कथन कराए गए। पुलिस के अनुसार कथन में फरियादी ने बताया कि, कोरोना से पहले फायनेंस कम्पनी में उसे मैनेजर के पद पर रखा गया था। जिस पर उसकी सैलरी 45 हजार रूपए मिलती थी। लॉकडाउन होने के उपरान्त सैलेरी में लगातार कमी होने लगी तथा घटना के समय सैलेरी 25 हजार रूपए हो गई थी। शेल्डन ने बताया सैलेरी के कम होने से न तो वह अपना हाऊस लोन भर पा रहा था, न ही अपने परिवार को सपोर्ट कर पा रहा था। शेल्डन ने पुलिस को बताया कि उक्त कारणो से वह डिप्रेशन में चला गया था, मुझे कुछ न समझ आने के कारण ही अपने आपको गोली मार ली थी । जिस पिस्टल से गोली मारी थी, उसे पुलिस द्वारा जप्त की गई हैं। घटना के साक्षी चिरंजीव जादव ने अपने कथनो में बताया है कि, घटना के पुर्व शेल्डन एन्थोनी बडवानी आया था और सिंघाना जिला धार से पिस्टल और राऊण्ड खरीदकर ले गया था।

पुलिस के अनुसार फरियादी के विरुद्ध धारा 309, 182, 211, 201 भादवि. एवं 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत, आत्महत्या का प्रयास करना, साक्ष्य छुपाना झूठी रिपोर्ट दर्ज करना एवं अवैध हथियार खरीद कर उसका उपयोग करने के गिरफ्तार किया।

डॉक्टर भूरिया के यूथ कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष बनने पर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं में उत्साह

माही की गूंज, सारंगी।

डॉक्टर विक्रांत भूरिया के मध्य प्रदेश यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष बनने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओ में खुशी के साथ उत्साह देखा जा रहा है। उक्त खबर मिलने के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नगर में आतिशबाजी कर एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर की। डॉ विक्रांत भूरिया के मध्य प्रदेश यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष बनने पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह राठौर ने खुशी जाहिर करते हुए बताया, डॉ. भूरिया के प्रदेश अध्यक्ष बनने पर युवाओं में काफी जोश है उनके नेतृत्व में पार्टी पूरे मध्यप्रदेश में फिर से परचम लहराएगी।

पूर्व पेटलावद जनपद उपाध्यक्ष योगेंद्र सिंह राठोर ने डॉ. भूरिया को बधाई देते हुए कहा, युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं में उत्साह और जोश है आपके नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी आगामी पंचायत चुनावों में विजय होगी। डॉ विक्रांत भूरिया के यूथ कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बनने पर कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष हनुमंत सिंह ठाकुर, डाबड़ी ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अग्नि नारायण सिंह, पूर्व पेटलावद जनपद अध्यक्ष हीरालाल डाबी, ब्लॉक कांग्रेस उपाध्यक्ष भैरूसिंह, सारंगी नगर कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह राठौर, आईटी सेल प्रदेश सचिव जयराजभट्ट, रणजीत सिंह राठौर, सुरेंद्र सिंह, ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने डॉ. भूरिया को बधाई दी।

देवझिरी तीर्थ पर हो रही आचार्य भगवन की मौन आराधना

माही की गूंज, झाबुआ। आचार्य श्री सुयश सूरिश्वर जी मसा देवझिरी जैन मंदिर तीर्थ में विराजमान है। जिनकी मौन साधना 25 दिसम्बर तक चलेगी। देवझिरी तीर्थ के संस्थापक सदस्य निर्मल मेहता ने बताया कि आचार्य भगवन मौन साधना में लीन हैं। श्रावक-श्राविकाएं दर्शन वंदन करने के लिए देवझिरी तीर्थ पर पधारकर लाभ लें। ग्यारस को आचार्य भगवन की मौन साधना पूर्ण होगी तथा उनका जन्म महोत्सव होने पर कई धार्मिक आयोजन व अनुष्ठान होंगे। जिसमें सभी श्रावक-श्राविकाओं को पधारने की अपील की है।

जोशी ने सम्भाला चौकी प्रभारी का पद

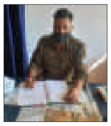

माही की गूंज, रतलाम/सुखेडा। सुखेडा पुलिस चौकी प्रभारी अशोक सिंह तोमर का स्थानांतरण नामली थाना पर हो जाने के कारण उन के स्थान पर जावरा सीटी थाना क्षेत्र के सब इंस्पेक्टर रघुवीर जोशी ने सम्भाला। सुखेडा चौकी का पद भार जोशी ने पद भार ग्रहण करने के बाद सुखेडा पुलिस चौकी पर पदस्थ आरक्षक जवानों से सलाह मशविरा कर अपराधियों पर पैनी नजर रखने को कहा, वहीं कोरोना जैसी गंभीर महामारी के प्रति ध्यान रखते हुए मास्क पहनें के साथ सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने व सैनिटाइजर का उपयोग करने के लिए जनता को जागरूक किया जाएगा। श्री जोशी के चोकी पर पदस्थ होने पर गणमान्य नागरिकों द्वारा फुल माला पहनाकर स्वागत किया गया।

मध्य प्रदेश शिक्षक संघ ने सेवानिवृत्त शिक्षकों को किया सम्मानित

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जिले में गत माह में सेवानिवृत्त होने वाले प्रधान पाठक व संघ के संभागीय सदस्य अलीराजपुर प्रताप सिंह भूरिया और प्रधान पाठक व संघ के ब्लॉक अध्यक्ष उदयगढ़ जिला अलीराजपुर हाबूसिंह चौहान के सम्मान में संघ ने बुनियादी स्कूल प्रांगण में शिक्षकों के साथ एक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त प्राचार्य अरविंद गहलोत ने की व पूर्व अध्यक्ष संघ बालकृष्ण शर्मा एवं बीआरसी अलीराजपुर मानवेंद्र सिंह गहलोत अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

शिक्षकों ने अपने उद्बोधन में श्री भूरिया एवं श्री चौहान द्वारा संघ के दायित्व एवं शिक्षकों की समस्याओं के लिए उनकी तत्परता की प्रशंसा की और आगे भी संगठन को मजबूती के साथ साथ देने का आवाहन किया। प्रतीक चिन्ह भेट देते हुए, शिक्षकों ने संघ को शक्ति एवं मजबूत करने की बात कही।

कार्यक्रम में श्रीमती माया तोमर, उमा गुप्ता, विकास बंबोरकर, संतोष राठौड़, अजय मंडलोई, शैतानसिंह भंवर, दिनेश राठौड़, महेश गुप्ता आदि कर्मचारी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संघ के सचिव शैलेंद्र सोलंकी ने किया व आभार नगर अध्यक्ष संतोष वर्मा एवं संस्था प्रमुख ने माना।

विवादों में रहे पेटलावद मण्डल की घोषणा नही होने से मंडल अध्यक्ष के बदले जाने की चर्चा सुर्खियों में

आखिर क्यों पेटलावद मण्डल कार्यकारणी की घोषणा जिला भाजपा ने नहीं की...?

घोषित मण्डल कार्यकार्णियो में नही रहा उम्र का दायरा, कई सीनियर नेताओं को जूनियर नेताओ के नीचे काम करने के लिए दिए पद

माही की गूंज, पेटलावद।

जिले की राजनीति का केंद्र बिंदु बना पेटलावद मंडल जहां से जिले की भाजपाई राजनीति का बड़ा हिस्सा होता है, जिला भाजपा की मंडल कार्यकरणी की घोषणा में पेटलावद मण्डल की कार्यकारणी गायब रही है, जिसके बाद से पेटलावद मंडल में राजनीतिक चर्चाओ का बाजार गर्म हो गया है। बताया जा रहा है पेटलावद मंडल अध्यक्ष स्वास्थ्य लाभ ले रहे है जिस कारण अपनी टीम के नाम जिले में नही भेज पाए, लेकिन अंदर खाने से मिल रही खबरों के अनुसार पेटलावद मंडल में बड़ा परिवर्तन हो सकता है। पेटलावद मंडल अध्यक्ष बदले जाने की चर्चाओ ने जोर पकड़ लिया है। पेटलावद मंडल पहले से ही विवादों में घिरा रहा है, यहां मंडल अध्यक्ष के पद के लिए कई दावेदार थे, मंडल अध्यक्ष तय होने तक दबाव और प्रभाव की राजनीति चलती रही और नामो की घोषणा से पूर्व अंतिम समय तक पेटलावद मण्डल पर माथापच्ची चलती रही, पद के लिए पेसो की लेनदेन और जिले के बड़े भाजपा नेता की किसी रिकॉर्डिंग का मामला भी सुर्खियों में बना रहा। अब जैसे ही पेटलावद मण्डल की कार्यकरणी की घोषणा अटकने से पेटलावद मंडल की राजनीतिक हलचल फिर से बढ़ गई।

पेटलावद मंडल में पद की दौड़ में नही है नेता, नही लेना चाहते पद

जहां पार्टी में राजनितिक पद के लड्डू सभी खाने के लिए लालायित रहते है परन्तु उसके उलट भाजपा में पेटलावद मण्डल के जिस व्यावसायिक व्यक्ति को अध्यक्ष घोषित किया उसके नेतृत्व में कोई भी नेता कार्य करने को तैयार नहीं है जिसको लेकर सभी का एक ही प्रश्न है की आखिर ऐसा पेटलावद मण्डल अध्यक्ष की नियुक्ति में जिला भाजपा संगठन पर क्या दबाव रहा कि ऐसे विवादित व व्यवसायीक व्यक्ति जिसकी धरातल पर राजनितिक रूप से कोई पकड़ नहीं है जिसको अध्यक्ष बना दिया गया।

वही नए मण्डल अध्यक्ष की नियुक्ति के बाद से पेटलावद मण्डल में विरोध के स्वर साफ देखे जा रहे है, एक्का-दुक्का जगह को छोड़कर नए मण्डल अध्यक्ष का स्वागत तक नही हुआ। ग्रामीण इलाकों में तो नए मंडल अध्यक्ष का कोई ज्यादा प्रभाव नही देखा गया, वही पेटलावद नगर सहित बडी पंचायतो के कई बड़े और पुराने नेता मंडल अध्यक्ष की नियुक्ति से खुश नही दिखे। पेटलावद मंडल के महत्त्वपूर्ण पदों पर से कई भाजपा कार्यकर्ताओ ने अपना नाम हटाकर पद लेने से मना कर दिया और कई नेता पद की दौड़ से बाहर ही हो गए है।

मंडल कार्यकरणी में नही रही उम्र की सीमा

भाजपा ने अपने मुख्य पदों के लिए उम्र की सीमा तय की थी जिसके चलते कई अनुभवी नेता मंडल अध्यक्ष की दौड़ से बहार हो गए, लेकिन मण्डल कार्यकरणी की घोषणा के दौरान उम्र की सीमा का ध्यान नही रखा गया कई सीनियर नेताओ को नए मन्डल अध्यक्षो के नीचे काम करने के लिए जवाबदारी दे दी गई तथा कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए नए नवेले नेताओ को भाजपा के मंडल की सूची में पुराने कार्यकर्ताओ को ताक मे रख कर जगह देकर तव्वजो दी गई।

आपसी फुट का लाभ स्थानीय चुनाव में कांग्रेस को

वर्तमान में भाजपा में पार्टी हित से अधिक स्वहित की लड़ाई ज्यादा चल रही है, पार्टी के बड़े नेता अपना प्रभाव दिखाने के लिए अच्छे कार्यकर्ताओं को खूंटी पर टांगकर अपने मोहरे बिठाने में जुटे है। दूसरी और कांग्रेस नेता एक-एक कर भाजपा में जाने से कमजोर हो रही है, वही पार्टी की फुट ओर प्रभाव की लड़ाई के बीच पंचायत, जनपत ओर जिला जनपत में कांग्रेस को लाभ हो सकता है। क्योंकि पिछले कई चुनावों का रिकॉर्ड देखा जाए तो पेटलावद विकास खण्ड के ग्रामीण इलाकों में कांग्रेस का प्रभाव अधिक रहा है, ऐसे में कमजोर नेतृत्व के कारण भाजपा का बड़ा नुकसान तय है जिसकी भरपाई के लिए भाजपा के पास समय है, अब ये देखना होगा कि पेटलावद मण्डल में परिवर्तन कर भाजपा डेमेज कंट्रोल करती है या स्वहित की राजनीति के साथ मैदान में उतरती है।

दुकाने रोड से अंदर लगाने के लिए नगर परिषद ने डाली चूने की लाइन

माही की गूंज, मेघनगर। नगर परिषद मेघनगर ने नगर में हर चौराहे पर अनाउंसमेंट करवाया कि, रोड पर लगने वाली सभी दुकानों को चूने की लाइन के अंदर लगाया जाए एवं जो भी रोड पर दुकान लगाते हुए पाया गया उसके खिलाफप्रशासनिक कार्रवाई की जाएगी एवं रोड पर लगे टीन शेड आदि को भी हटाया जाए। बुधवार को नगर में रेलवे स्टेशन रोड, भंडारी चौराहा, साईं चौराहा से लेकर झाबुआ चौराहे तक एवं बस स्टैंड पर चूने की लाइन डाली गई।

बता दे कि, ट्रैफिक जाम होने से गाड़ी के आवागमन में तकलीफआने से सभी जगह दुकाने रोड से अंदर लगवाने के लिए नगर में चूने की लाइन डाली गई है।

हाट बाजार में लंबे समय बाद फिर आई रौनक

माही की गूंज, रतलाम/पिपलोदा। कोरोना के लंबे समय के बाद पिपलोदा का हाट बाजार मंगलवार से शुरू हो गया है। स्थानीय प्रशासन के द्वारा कोरोना के चलते प्रति मंगलवार को लगने वाले इस हाट पर रोक लगा दी गई थी, स्थिति सामान्य होने पर 22 दिसंबर मंगलवार से पुनः हॉट की शुरुआत कर दी गई है।

नगर परिषद सीएमओ आरती गरवाल ने बताया कि, समस्त सब्जी वाले व व्यापारियों को हिदायत दी गई है कि सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर सैनिटाइजर का उपयोग करें एवं भीड़ न होने दें।

सब्जी व्यापारी रामलाल माली, दुर्गा शंकर जाट, प्रेम नारायण आदि ने बताया कि, हमारे द्वारा दुकाने तो लगाई गई लेकिन ग्राहकों को जानकारी नहीं होने के कारण इस बार व्यवसाय मंदा रहा।

8 वे रोड़ में जाने वाली भूमि व निर्माणाधीन मकानों का नहीं मिल रहा लागत मूल्य का भी मुआवजा

पीड़ित आज भी प्रशासन से लगा रहे मुआवजे की गुहार

मामलाः बस स्टॉप पाइंट में जाने वाली तोलसिंह कटारा की भूमि में बने मकानों की लागत मूल्य से मुआवजा नहीं मिलने का

माही की गूंज, खवासा।

भारत माला परियोजना के अंतर्गत बन रहे दिल्ली-मुंबई 8 वे रोड में जाने वाली भूमि के साथ-साथ भूमि पर बने आशियानो का भी लागत मूल्य अनुसार मुआवजा नहीं मिल रहा है, जिसको लेकर आज भी सड़क निर्माण के ठेकेदारों व पीड़ित के साथ विवाद की स्थिति बन रही है तो, वहीं प्रशासन से भी शासकिय गाइडलाईन अनुसार ही लागत मूल्य से मुआवजा देने की गुहार लगाई जा रही है।

एसडीएम से लघु काश्तकार ने लागत मूल्य से मुआवजा दिलाने की मांग की

थांदला ब्लॉक के ग्राम तलावड़ा निवासी तोलसिंह पिता हकरिया कटारा लघु काश्तकार होकर कोटवाल के पद पर पदस्थ हैं। तोलसिंह कटारा की भूमि तलावडा पटवारी हल्का नंबर 53 सर्वे नंबर 1129/5 की करीब 2 बीघा जमीन उक्त एक्सप्रेस-वे मार्ग में ग्राम तलावडा में बन रहे बस स्टॉप पॉइंट में जा रही है। उक्त भूमि पर लघु काश्तकार तोलसिंह कटारा ने अपने आशियाने व कृषि कार्य एवं मवेशी हेतु 4 मकान, नलकूप, गोबर गैस प्लांट आदि बना रखे थे, जिनका अनुमानित लागत मूल्य 30 लाख के करीब है परंतु 19 लाख रुपए ही मुआवजे के रूप में मंजूर होना बता रहे हैं, जिसे तोलसिंह कटारा ने लेने से इनकार कर दिया है।

10 बिंदुओं पर की मांग, किसान पर है 12 लाख का कर्ज

वही तोलसिंह कटारा ने अपनी वास्तविक मांग के साथ एसडीएम थांदला को 14 दिसंबर को लागत मूल्य से मुआवजा दिलवाने की मांग की है। मांग पत्र में 10 बिंदुओं पर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कर आवेदन दिया है, जिसमें उल्लेख किया कि, रहने का एक पक्का मकान 26 बाय 41 कुल 1 हज़ार 66 वर्ग फ़ीट में दो मंजिला आरसीसी मकान बना है जिसकी अनुमानित लागत मूल्य 16 लाख 8 हजार रुपए, जिसके पीछे बाउंड्री वॉल एवं एक चद्दर पोश मकान 500 वर्ग फ़ीट जिसकी लागत 3 लाख 90 हजार, साइड में पानी का टैंक, शौचालय, बाथरूम, 143 वर्ग फीट में पक्का निर्माण लागत 1 लाख 50 हजार। पशु सामग्री व कृषि उपकरण सामग्री रखने हेतु चद्दर का 256 वर्ग फीट में बना मकान लागत 2 लाख 10 हजार। मवेशी के लिए कवेलू का 240 वर्ग फीट में बना मकान लागत 18 हजार रुपए। ट्यूबवेल खनन 500 फीट गहरा लागत 60 हजार रुपए। माही नदी से 3 इंची पाइपलाइन 6 हजार फिट लागत 3 लाख 60 हज़ार रुपए, पाइपलाइन खुदाई व फिटिंग खर्च एक लाख 50 हजार रुपए। 30 वृक्ष जो उखाड़ दिए गए 30 हजार रुपए। गोबर गैस प्लांट लागत 25 हजार रुपए, जिनकी अनुमानित कुल लागत 29 लाख 13 हजार रुपए हैं। उक्त निर्माण का इंजीनियर से सर्वे करवाकर शासन के प्रावधान अनुसार दोगुनी राशि दिलाने की मांग की है।

आवेदन में उल्लेख कर किसान ने बताया कि, उस पर बाजार का 12 लाख रुपए का कर्ज है जो किस्तों में चुका रहा है। वहीं आवेदन में तोलसिंह ने बताया कि, उनके पास पियत की 4 बीघा जमीन थी जिसमें 2 बीघा जमीन 8 वें में चली गई है, अब सिर्फदो बीघा जमीन बची है जिसमें वह उसका व परिवार का पालन पोषण करने में असमर्थ रहेगा।

तोलसिंह कटारा ने माही की गूंज को बताया, मुझे पूर्व में 2 बीघा जमीन का मुआवजा 2 लाख 60 हजार रुपए दिया गया था, जो कि गांव में पियत की कोई भी भूमि 1 लाख 30 हजार रुपए प्रति बीघा में नहीं मिलती है, हमारे साथ छलावा कर हमें पर्याप्त मुआवजा नहीं दिया जा रहा है। जमीन की तरह अगर हमें हमारे उक्त निर्माण का मुआवजा भी शासन के प्रावधान अनुसार लागत मूल्य का दोगुना नहीं दिया गया तो, हम किसी भी स्थिति में हमारे मकान को नहीं तोड़ने देंगे। अगर ठेकेदार द्वारा जबरदस्ती की जाती है तो उस स्थिति में हमारे परिवार के सदस्य मकान के अंदर रहेंगे और फिर बुलडोजर घुमाकर हमारे आशियाने को तोड़ते हैं तो, हमें मौत के घाट उतारकर ही वह तोड़ेंगे, वरना हम किसी भी स्थिति में हमारा जब तक वास्तविक लागत मूल्य का मुआवजा नहीं मिलता तब तक हम नहीं तोड़ने देंगे, कहते हुए प्रशासन से मांग की है कि, वह मामले को गंभीरता से लेकर मुआवजा दिलवाया जाए।

कलेक्टर जैन स्कॉच सिल्वर अवार्ड से हुए सम्मानीत

माही की गूंज, शाजापुर।

कोरोना वायरस कोविड-19 के संक्रमण काल में ग्रामीणों की समस्याओं को सुनने के लिए शाजापुर कलेक्टर दिनेश जैन ने अभिनव नवाचार करते हुए वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जनसुनवाई शुरू की है। इस नवाचार के चलते कलेक्टर श्री जैन ने जिले की लगभग 240 ग्राम पंचायतों के सरपंचो सहित ग्रामीणों से संपर्क कर उनकी समस्याएं जानी और यथोचित निराकरण भी किया। इस नवाचार के लिए कलेक्टर श्री जैन ने स्कॉच अवार्ड के लिए 19 नवंबर को नॉमिनेशन दर्ज कराया था, इस पर 4 दिसंबर से 6 दिसंबर तक वोटिंग हुई जिसमें 21 दिसंबर को जिले को सेमीफाईनल में स्थान प्राप्त हुआ। सेमीफाईनल के बाद 22 दिसंबर को स्कॉच अवार्ड की टीम के समक्ष कलेक्टर ने अपने कार्यों से संबंधित ऑनलाइन प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर शाजापुर कलेक्टर को सिल्वर स्कॉच अवार्ड प्राप्त हुआ है।

स्कॉच अवार्ड निजी क्षेत्र का प्रशासकीय नेतृत्व योजना क्रियान्वयन में नवाचार तथा उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिया जाने वाला प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार है।

कलेक्टर श्री जैन ने कहा कि, अवार्ड प्राप्त होने में ई-गवर्नेन्स के प्रबंधक बिरम सिंह सोंधिया सहित सभी कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्कॉच अवार्ड जिले की जागरूक जनता अधिकारियों कर्मचारियों के परिश्रम व स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग का परिणाम है, इसके लिए मैं सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हुं।

पंचाल पुनः भाजपा मण्डल महामंत्री नियुक्त

माही की गूंज, कुन्दनपुर। कुन्दनपुर भाजपा जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह नायक की अनुशंसा पर कुदंनपुर मंडल के नवनियुक्त अध्यक्ष भारतसिह मैडा ने पुर्व कमेटी में महामंत्री रहे जितेन्द्र पंचाल को उनकी पार्टी हीत में कार्यकुशलता को देखते हुए दूसरी बार पुनः मंडल महामंत्री के पद पर जितेंद्र पंचाल को नियुक्त किया गया।

कर्मकार कार्ड बनाने के लिए सरपंच-सचिव कर रहे रुपयों की मांग

खाद्ययान पर्ची के लिए परिवार परेशान

माही की गूंज, पेटलावद।

ग्राम पंचायत में आम जनता को सरकार की जन हितेषी योजनाओं का लाभ लेने और ग्राम पंचायत के माध्यम से होने वाले छोटे-छोटे कार्यो के लिए पंचायतो के चक्कर लगाने पड़ते है और बिना लेने-देन के कोई काम नही होता। जिसके लिए न केवल आमजन को भटक ना पड़ता है बल्कि शिकायत के माध्यम से अपने काम करवाने पड़ते है, यदि शिकायत से अधिकारी पंचायत के जबाबदारो के कार्य करवा दे तो ठीक, वरना शिकायत के बाद ग्राम पंचायत सचिव-सरपंच शिकायत के एवज में होने वाले कार्य पर भी रोक लगाकर परेशान करते है।

ऐसा ही एक मामला ग्राम पंचायत टेमरिया का है भरत पिता मांगीलाल गरवाल निवासी पंथबोराली ने अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद कार्यालय में आवेदन देते हुए ग्राम पंचायत के सरपंच एवं सचिव पर कार्य के लिए राशि मांगने का खुला आरोप लगाया है। भरत गरवाल ने आवेदन में बताया कि, कर्मकार कार्ड के लिए सचिव से गुहार लगाई तो उसने सरपंच के पास भेज दिया और सरपंच के पास आवेदन लेकर गया तो सरपंच ने परिवार के प्रति सदस्य के अनुसार एक हजार रूपए कुल चार हजार रुपए की मांग की, साथ ही युवक का आरोप है कि, विगत दस वर्षो से उसे खाद्यान्न पर्ची तक नही मिली जिस कारण परिवार सरकारी अनाज योजना से भी वंचित है। एक ओर मुख्यमंत्री खाद्यान्न पर्ची को लेकर अधिकारियों को कड़े निर्देश जारी कर रहे है वहीं पंचायत स्तर पर आमजन खाद्यान्न पर्ची जैसे कार्य के लिए परेशान हो रहे है।

- शिकायतकर्ता भरत गरवाल

पैसे नही तो कार्ड नही

भरत द्वारा पंचायत द्वारा कर्मकार कार्ड के लिए मांगी गई राशि नही होने की बात कही तो ग्राम पंचायत द्वारा कार्ड नही बनाया गया जिस कारण आज तक कर्मकार कार्ड नही मिल सका। शिकायत के बाद युवक को उम्मीद है कि, उसकी समस्या का निराकरण होगा और कार्य के पैसे मांगने वाले सरपंच-सचिव पर कार्रवाई भी होगी।

लापरवाही — हत्या का आरोपी पुलिस गिरफ्त से भागा, पुलिस ने पीछा कर पकड़ा

माही की गूंज, रतलाम।

विगत दिनों सुपारी लेकर युवक की गोली मारकर हत्या करने के मामले गिरफ्तार सुपारी किलर लाला सोमवार शाम को पुलिस की गिरफ्त से भाग गया, लेकिन पुलिस ने उसका पीछा करते हुए उसे फिर पकड़ लिया। सूत्रों के अनुसार उसके पैर में गंभीर चोंट लगी है भागने में सुपारी किलर भी घायल हुआ है।

बरलीपाड़ा (रामपुरिया) निवासी 21 वर्षीय मुकेश की 14 दिसम्बर को नौकरी से घर जाते समय औद्योगिक थाना क्षेत्र के ग्राम मुंशीपाढ़ा के निकट गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में पुलिस ने सैलाना के अशोक नामक व्यक्ति के साथ ही सुपारी किलर लाला उर्फलाल खां और दिनेश को गिरफ्तार किया था। अशोक ने इन दोनों को हत्या के लिए ढाई लाख की सुपारी दी थी।

आरोपी की जानकारी की तस्दीक के लिए लेकर निकली थी पुलिस

न्यायालय ने तीनों आरोपियों को 22 दिसंबर तक पुलिस रिमांड पर रखने के आदेश दिए हैं। पुलिस पूछताछ में लाला ने बताया कि, जिस पिस्टल से गोली मारी थी, वह ग्राम पाताखेड़ी थाना जावरा औद्योगिक क्षेत्र के एक व्यक्ति से लाया था। पुलिस दल लाला द्वारा दी गई जानकारी की तस्दीक करने व उक्त व्यक्ति की तलाश में लाल को लेकर ग्राम पाताखेड़ी गई था लेकिन उक्त व्यक्ति नहीं मिला। पुलिस दल जीप में लाला को लेकर वापस औद्योगिक क्षेत्र थाने लौट रही थी तभी शाम करीब साढ़े सात बजे रास्ते में रेलवे फाटक के पास लाला पेशाब का बहाना कर पुलिस वाहन रुकवाया ओर हथकड़ी सहित नीचे उतारा। इसी बीच उसने पुलिसकर्मी दीपक यादव से मारपीट व धक्का-मुक्की की और पत्थर मारकर हथड़की सहीत भाग गया।

- घायल जवान से मिलने पहुंचे एसपी और हत्या का आरोपी लाल खां।

गिरते-पडते भागते उसके पैर में चोट आई लेकिन वह उठकर पुनः भागने लगा, तभी एसआई अल्केश सिंघाड़, जितेंद्र कनेश, आरक्षक वीरेंद्र ने पीछा कर उसे पकड़ लिया। पुलिसकर्मी दीपक के सिर व सीने पर चोट आई है, उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं लाला को ज्यादा चोट नहीं होने से भर्ती नहीं किया गया, उसे प्राथमिक उपचार के बाद थाने ले जाया गया।

थाना प्रभारी रेवलसिंह बरडे ने बताया कि, आरोपित लाला उर्फलाल खां को दल पिस्टल के संबंध में ग्राम पाताखेड़ी लेकर गई थी, वहां से लौटते समय उसने पेशाब आने का बहाना किया, जब उसे वाहन से नीचे उतारा गया तो वह पुलिसकर्मी से मारपीट व धक्का-मुक्की कर भागने लगा, भागते समय गिरने से लाला को पैर में चोट आई है, उसे दल ने कुछ ही दूरी से पकड़ लिया। दीपक के सिर में पत्थर लगने से चोट आई है।

पूर्व में बलात्कार के आरोपी भी हो चुके है पुलिस गिरफ्त से फरार

विगत कुछ माह पूर्व हुए एक नाबालिक लड़की के बलात्कार और हत्या के दो आरोपी भी रतलाम पुलिस की गिरफ्त से फरार हो चुके है जिनको बड़ी मशक्कत के बाद पुलिस पकड़ पाई थी। वहीं बड़े अपराध के आरोपियों का इस प्रकार पुलिस की गिरफ्त से फरार होने से पुलिस व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे है।

बिना रजिस्ट्रेशन के होम्योपेथिक डॉक्टर कर रहा था फर्जी रूप से एलौपेथिक इलाज, पुलिसकर्मी की मौत के बाद प्रशासन जागा

डॉक्टर को गिरफ्तार कर विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज, फर्जी हॉस्पीटल को किया सील

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जिले में अवैध रूप से कई निजी अस्पताल चल रहे है जिनके पास कोई रजिस्ट्रेशन नही है। ऐसा ही मामला अलीराजपुर में गत दिनों सोरवा नाका स्थित अलीराजपुर जनरल हॉस्पिटल में एक पुलिसकर्मी जालमसिंह गवली की डॉक्टर की लापरवाही के कारण उपचार के दौरान मौत हो गई थी। जिसके चलते रात्रि को पुलिस कर्मियों एवं मृतक गवली के परिजनों के द्वारा जनरल हॉस्पिटल में जमकर हंगामा कर विरोध जताया था। अपने साथी पुलिसकर्मी स्व. गवली की जनरल हॉस्पिटल में हुई मृत्यु से पुलिस कर्मियों सहित आमजनों में काफी रोष था। पुलिस ने इस हॉस्पिटल के संचालक मोहसिन मकरानी को गिरफ्तार कर अलीराजपुर जनरल हॉस्पिटल को सील कर दिया गया।

पुलिस द्वारा दर्ज की गई एफआईआर के अनुसार अलीराजपुर जनरल हॉस्पिटल बिना रजिस्ट्रेशन का चल रहा था। पुलिस ने इस हॉस्पिटल के संचालक मोहसिन मकरानी को गिरफ्तार कर उसे रिमांड पर लिया है। अब सवाल यह उठता है कि, जिले में इतने समय से बिना रजिस्ट्रेशन के चल रहे इन निजी अस्पतालों की जांच क्यों नही की गई थी। बात यदि आलीराजपुर जनरल हॉस्पिटल की करे तो यहां पर होम्योपैथी डॉक्टर मोहसिन मकरानी द्वारा एलोपैथी का उपचार कर आमजन की जान के साथ खिलवाड़ कर रहा था।

विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज

जिला चिकित्सालय के आरएमओ डॉ संजय सोलंकी ने जांच के दौरान पाया कि सोरवा रोड स्थित जनरल हॉस्पिटल संचालक मोहसीन मकरानी निवासी आलीराजपुर अवैध निजी हॉस्पिटल खोलकर उसमें आम लोगो का उपचार करने के साथ अस्पताल में वांछित योग्यता और मापदंडों के चिकित्सकों द्वारा उपचार ना कर, अयोग्य व बिना मेडिकल कांउसलिंग से पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी से उपचार करने तथा अवैध निजी अस्पताल द्वारा पिछले कई महिनों से लोगो का उपचार करने के कारण धारा 420 भादवि व 24 मध्यप्रदेश आर्युविज्ञान परिषद् अधिनियम 1987 व धारा 8,10 मध्यप्रदेश उपचर्यागृह तथा रूजोपचार संबंधी स्थापनाएं (रजिस्ट्रकरण तथा अनुज्ञापन) अधिनियम 1973 व धारा 15(2), 15(3) इंडियन मेडिकल कांउसलिंग एक्ट 1956 का पाया जाने से अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया। फ्लस्वरूप कोतवाली पुलिस ने धारा 356/20, 420, 24 भादवि धारा 8,10 म.प्र. उपचार्य गृह तथा रजोपाचार्य अधिनियम के अंतर्गत प्रकरण दर्ज कर हॉस्पिटल संचालक को गिरफ्तार किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422